दतिया

काव्य-धारा

द्वितीय भाग

दतिया

काव्य-धारा

द्वितीय-भाग

पद्य काव्यधारा-तरंग

गद्य काव्यधारा-तरंग

गीत काव्यधारा-तरंग

गज़ल काव्यधारा-तरंग

विविध काव्यधारा-तरंग

Bhawan's Sri Sankaracharya Sanskrit Mahavidyalaya
630

प्रकाशक

मानस मन्दिर, दतिया (म०प्र०)

मुद्रक-

भानु प्रिन्टर्स,

मुड़ियन का कुआ, दतिया। (म०प्र०)

प्रथम संस्करण 26 जनवरी 1993 ई० (मूल्य 25 रु०

दतिया काव्य-धारा

द्वितीय-भाग

उत्प्रेरक-

डा० हरिहर प्रसाद गोस्वामी 'मानस विश्वास'

[एम. ए. हिन्दी, पी-एच. डी.]

प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, शा० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया (म०प्र०)

डा० रामेश्वर प्रसाद गुप्त

[एम०ए० (संस्कृत, हिन्दी), पी- एच० डी०, स्वर्णपदक प्राप्त]

आचार्य एवं अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग,
शा० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया (म०प्र०)

श्री बी० मरिया कुमार

[आई० पी० एस०]

पुलिस-अधीक्षक, दतिया (म०प्र०)

सम्पादक मण्डल-

शशि त्रिपाठी [एम० ए० एल. एल. बी.]

कुँवर रमाकान्तपाल सिंह [एम. ए. हिन्दी]

कमलेश दुबे [एम० ए० संस्कृत]

Bharatiya Vidya Bhawan's Sri Sankaracharya
630

स० स०

राधेश्याम त्रिपाठी 'शान्त', जगदीश शरण बिलगैयाँ 'मधुप'
डी० डी० सिंह चन्देल 'पीयूष', हरि सिंह 'हरीश'
ऋषि मोहन श्रीवास्तव, राज गोस्वामी, महेन्द्र शुक्ल

कोषाध्यक्ष-

श्रीमती शान्ति गोस्वामी
मानस भवन, चूनगर फाटक, दतिया (म०प्र०)

विशेष - उक्त सभी अवैतनिक ।

सम्पर्क सूत्र - मानस मन्दिर, चूनगर फाटक, दतिया (म०प्र०)

प्राक्कथन

डा० रामेश्वर प्रसाद गुप्त
एम० ए० (संस्कृत, हिन्दी) पी-एच०डी०, स्वर्ण पदक प्राप्त
आचार्य एवं अध्यक्ष, शा० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया (म.प्र.)

महाभारत कालीन राजा दन्तवक्र का यह दिलीप नगर दतिया भारत-माता की कण्ठमाल के रूप में विश्वविश्रुत है 'दतिया' शताब्दियों पूर्व से ललित एवं काव्य कलाओं का केन्द्र रहा है। तन्त्रविद्या में निष्णात श्री हिमकर ओझा और कुश्ती में विश्वविजेता 'श्री गामा' पहलवान की जन्म कर्म भूमि होने का इसे यशः पूतगौरव प्राप्त है। मृदंग (वाद्य विशेष) की मृदुल मन्द्र रम्य संध्वनि से मन को विराम देने में सक्षम आचार्य श्री कुदऊँ सिंह की स्मृति में मानो इस दतिया जिले ने तानपूरे (वाद्य विशेष) का रूप धारण कर साहित्य, वाद्य एवं संगीत प्रेम को स्पष्ट किया है।

मध्यकालीन हिन्दी काव्य परम्परा के प्रणम्य कवियों में सुकीर्ति प्राप्त पद्माकर से अद्य पर्यन्त दतिया के शताधिक 'सिद्ध सुकवि" साहित्य जगत् में काव्य-पिपासुओं की तृप्ति हेतु एवं समाज की सुचारु-व्यवस्था तथा जीवनोत्कर्ष हित अपनी अजस्र काव्य स्रोतस्विनी को प्रवाहित करते रहे।

दतिया के यशस्वी काव्य-स्रष्टा अपने काव्योन्मेष से अज्ञान तिमिर का विध्वंश कर एवं ज्ञानदीप को ज्योतिर्मय कर सम्पूर्ण समाज के लिये सत्मार्ग प्रशस्त करते आ रहे हैं। इन महामनीषियों ने काव्य-संस्कारों का बीजारोपण कर दतिया नगरी को अनवरत प्रवाहित होने वाली काव्य-रसधार के उन्नायक सुकवियों की एक-अबाध परम्परा को अक्षुण्ण रहने का शुभ आशीष प्रदान किया, जो समय समय पर अनेक काव्य-कृतियों एवं संकलनों आदि के माध्यम से प्रत्यक्ष होता है। "दतिया काव्य धारा" द्वितीय-भाग इसका पुष्ठ प्रमाण है।

वस्तुतः मानव-समाज में शान्ति, सुख, सम्पन्नता सौहार्द्र आदि की संस्थापना एवं सात्त्विक समाज के प्रहर्षण-अस्तित्त्व की संधारणा काव्य या साहित्य सृष्टि का प्रथम प्रयोजन है। "कला का जीवन के लिये होना अनिवार्य है"। यह जीवन केवल मानव जीवन ही नहीं, अपितु प्रकृति तक उसके प्रांगण में अंकुरित, प्रस्कुरित प्रत्येक चेतन स्फुलिंग भी है। सभी प्राणियों के बीजाधान एवं अंकुरण से लेकर सम्यक् प्ररोहण, वर्धन, पोषण एवं सुफलन में काव्यरस का सिञ्चन उपयुक्त उपादान हैं। यदि साहित्य कलाभिव्यक्ति मात्र होकर प्राणि

मूल्यों के अवधारण से रहित हैं, तो वह एकाँगी है। सम्पूर्णता के लिये काव्य-साहित्य का उक्त सर्वांगीण रूप होना अनिवार्य है।

आज भारतीय-भौतिक पर्यावरण इतना दूषित नहीं है, जितना कि व्यक्तिवाद के कारण मानसिकपर्यावरण कलुषित है। वस्तुतः मानसिक पर्यावरण की कलुषता ही हमारे भौतिक पर्यावरण के दूषण का निमित्त है। इस द्वन्द्व-द्वेष स्वार्थ संपृक्त कालुष्य के प्रक्षालन में श्रेष्ठ कवियों की सुभान्विता श्रेष्ठ संरचनायें ही सार्थक सिद्ध होती हैं। महाकवि विहारी की मात्र दो पंक्तियाँ राजा जयसिंह के जागरण-हेतु अलं थी—

नहि पराग नहि मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सों विध्यो, आगे कौन हवाल॥

सुचारु काव्य सृष्टि में कवि की संत-भावना एवं सद्साधना निमित्त एवं उपादान है। सुकृती साधक सुकवि की कृति ही कलात्मक, भावात्मक एवं मर्मस्पर्शी होती है।आज कविकुल के लिये सुकृती कवि मनीषियों का सन्मार्ग अनुकार्य है, तभी समाज में कवि और कविता प्रतिष्ठा प्राप्त कर आदर्श अनुकरणीय पाथेय सिद्ध होंगे।

सत्काव्य स्वल्प होने पर भी गंगोत्री के पावन पय के समान मोक्षद होता है और असत्काव्य चक्षुविहीन प्राणी के समान और बहुसंततिनिर्धन के समान स्वयं के तथा समाज के उत्पीडन का कारण बनता है। सत्काव्य-सृष्टि आत्मदर्शन कराती हुई परब्रह्म की सर्जना को परमानन्दित कर प्रशस्त पथ का प्रदर्शन कराती है। अतएव साधना से सत्कवि बनकर सत्साहित्य की संरचना ही श्रेयस्कर है।

प्रस्तुत संकलन में प्रवृति एवं निवृत्तिमूलक रचनाधर्मिता का सहयोजन है। विविधा विवेच्य इन रचनाओं में छायावादी, प्रगतिवादी प्रयोगवादी एवं रहस्योन्मुखी गीतिकायें, व्यंग्य तथा ध्वन्यात्मक प्रयोग अन्वेष्य हैं। कतिपय रचनाओं में भाषा की प्राञ्जलता एवं भावों की रम्यता तथा रस का आह्लाद मनोरम एवं आस्वाद्य है। कतिपय गेय गीतों की मनोरम झंकृति भी उन्मन मन के प्रसादन में सुघर है। राष्ट्रीय भावनाओं एवं सुसंस्कारों के आधान में विशिष्ट कृतियाँ सद्प्रेरिकायें सिद्ध होंगी, इसी आत्म विश्वास के साथ दतिया काव्य-धारा के अजस्र अवाध सुप्रवाह की शुभकामनायें।

सम्पादकीय

सत्पुरुषों की वाणी संरचनात्मक होती है। भक्त-कवि तुलसी दास के शब्दों में उक्त वाणी ही शिव सम्मान्या है।

कीरति भनिति भूति भल सोई, सुरसरि सम सबकर हित होई ॥

कवि की भारती (वाणी) अन्तर्मन से अंकुरित, साधना-प्रक्रिया से निर्मित, कलात्मक, सात्त्विक, तात्त्विक, शिवान्वित-अवधारणाओं की सम्पृक्ति पूर्ण रम्य प्रभावना है। काव्य-यज्ञानुष्ठान का महार्घ-अवदान समाज-हिताय होना ही उसके साफल्य का द्योतक है। काव्य सच्चिदानन्द का स्वरुप है। यह त्रिगुणमयी सृष्टि के अजिर में सत्त्वगुण है। यह मन-आह्लादन मात्र नहीं, अपितु संस्कारित साधना से समुद्भूत वह पारिजात है, जो शान्त, क्लान्त एवं त्रितापों से संतप्त प्राणिमात्र को शान्तिस्वरूप शीतल छाया, रुचिकर सुभावित सुरभि एवं मधुररसमय सुफल से सम्पुष्ट कर प्रहर्ष प्रदान करता है।

काव्यलक्षणोपेत (भाषा, भाव, गुण, अलंकार, रस एवं ध्वनि सम्पृक्त) प्रस्तुत "दतिया काव्य धारा" पाँच तरंगों पद्य, गद्य, गीत, गजल तथा विविध काव्य धारा तरंग में विभक्त हैं। पाँचों धाराओं में प्रत्येक के प्रारंभ में दतिया के विश्रुत संतसाधक सुकवियों का उनकी 'संरचनाबानगी' के साथ स्मरण है। काव्य-धारा के प्रारम्भ में "दतिया गौरव गाथा" शीर्षक से इस तपस्थली की सुकीर्ति कीर्तित है।

सम्पादक मण्डल प्रस्तुत संकलन के प्राक्कथन-लेखन एवं निःस्पृह परामर्श के लिये डा० रामेश्वर प्रसाद गुप्त, आचार्य एवं अध्यक्ष संस्कृत-विभाग, शा० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया के प्रति आभार अभिव्यक्त करता है तथा विशेष सहयोग-हेतु श्री बी० एम० कुमार (आई० पी० एस०) पुलिस अधीक्षक, दतिया के प्रति कृतज्ञ है।

सीमित साधनों से सीमाबद्ध इस संकलन की न्यूनतायें क्षम्य होंगीं, इस आशा के साथ सुधी समाज से इस रचना धर्मिता पर अमूल्य अभिमत विनत भाव से आमन्त्रित हैं।

अंत में, सुकवियों की काव्याञ्जलियाँ सदैव सम्पन्न एवं सम्पुष्ट होकर समाज का सम्बर्धन करें, इसी आशीषाकांक्षा के साथ यह संकलन सुधी समाज को सादर सविनय समर्पित है।

दतिया-काव्य-धारा 'द्वितीय भाग'

पद्यकाव्यधारा-तरंग

क्र.	काव्यकार	शीर्षक	पृष्ठांक
1	स्व० पं० महाकवि सुधाकर शुक्ल	दतिया-गौरव	1
	पं० श्री वासुदेव गोस्वामी	"	
	डा० रामेश्वर प्रसाद गुप्त	"	
2	कविवर राजापृथ्वीसिंह 'रसनिधि'	स्मरण	2
	कविवर श्री अक्षर अनन्य 'अनन्य'	"	
3	स्व० पं० महाकवि सुधाकर शुक्ल	किरनदूत खण्डकाव्य से छन्द	3
4	डा० मुंशीलाल पटैरिया 'शशिधर'	मेघदूत का भावानुवाद	4
5	डा० रामेश्वर प्रसाद गुप्त	'सवैया-छन्द'	5
6	श्री डी० डी० सिंह चन्देल 'पीयूष'	कुण्डलियाँ-छन्द	6
7	पं० श्री जगदीशशरण विलगैयाँ	हास्य-रसायनम्	7
8	श्री रणवीर सिंह चौहान	'कामना' जिन्दादिल	8
9	श्री अनन्तराम गुप्त	द्वादश ज्योर्तिलिंग	9
10	श्री सियाशरण भट्ट 'वज्र'	'विपद-बिडारन स्तोत्र	10
11	श्री नर्मदा प्रसाद ज्योतिषी	सवैया	11

"दतिया काव्य-धारा सुधाधारा"

शील ज्यों सब सुखों का आकर प्रभाकर यशस्कर।
वर विवेक विकार बाधक, साधता का विघ्न हर।
शिष्ट-संयम मनुज को देता सुकीरति का शिखर।
दिब्य "दतिया-काव्य-धारा" सुधाधारा धरा पर॥

कमलेश दुबे "कमलेश"
पीताम्बरा पीठ, दतिया

दतिया-गौरव

"दतिया अति अभिरामा"

यह महामृगयु गोविन्द सिंह की 'दतिया अति अभिरामा'
घर घर हरि मन्दिर जहाँ, विश्व विजई जहँ जन्म्यौ गामा ।
पञ्चम कवि, चिरई टोर, उड़त सी उड़नू रामलला है,
वक्सी, बनखण्डी, करन - सरोवर, ता सम कौंन भला है ॥

महाकवि पं सुधाकर शुक्ल, कवि कुलाय, दतिया ।

" गरे कौ हार दतिया "

जाके पग पायलें परी हैं रतनाकर की
बंग गुजरात कल कंकन करति या ।
विन्ध्याचल जासु करधौनी अति नौनी लसै,
वासुदेव मुकुट हिमालय धरति या ।
सारी जरतारी बनी बनक बनारस की,
गंगा सी किनारी धारी छोर सरवतिया ।
दिल्ली दिपै बेंदी जाकी, कासमीर सीस फूल,
बृन्दावन बेसरि, गरे कौ हार दतिया ।

पं० वासुदेव गोस्वामी, वाणी विहार, दतिया ।

'दतिया को शत वन्दन'

जहँ मृदुमृदंग की मृदुल मार में कुदउँ सिंह विज्ञानी,
जिनकी करतल की 'रति' सुकीर्ति कहती थी नभ की वानी ।
संगीत-सुधा, साहित्य-विधा, सुविधा, 'दुविधा का क्रन्दन,
वाणी-विहार, कवि निकर सार-सर-दतिया को शत वन्दन ॥

डा० रामेश्वर प्रसाद गुप्त,
आचार्य एवं अध्यक्ष, (संस्कृत-विभाग)
शा० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया ।

स्मरण

कविवर राजा पृथ्वी सिंह 'रसनिधि'

[सं. 1717 वि. के लगभग वर्तमान, सेवढ़ा के राजा]

रचनाकाल सन् 1603–1660 ई0

[अनेक काव्य–कृतियों के रचयिता, 'रतन हजारा' प्रकाशित]

दोहा

आपु फूल आपुहि भ्रमर, आपु सुबास बसाई।
आपुहि रस आपुहि रसिक, लेत आपु रस आई॥

अद्‌भुत गति यह प्रेम की, बैनन कही न जाय।
दरस भूख लागै दृगन, भूखहि देत भगाय॥

मन गयंद छवि मद छके, तोरि जंजीर भगात।
हिय के झीने तार सों, सहजै ही बँधि जात॥

कविवर श्री अक्षर अनन्य "अनन्य"

जन्म सं० 1710 वि० निवास स्थान–ग्राम सेनुहरा (दतिया)

[अनन्य प्रकाश' सहित अनेक काव्यकृतियों तथा योग ग्रन्थों के रचयिता]

कवित्त

आपुही में आपुल लहै और में न और कहै,
सब ही में सब वहै पूरन वखानिये।
नारी नर वीच ऊँच नीच कौ विचार नाहीं,
चराचर रूप, रूप वहै पहचानिये।

जैसे एक डोर गुहे गुरिया 'अनन्य' भनै,
छोटे बड़े भिन्न नाही माला वहै मानिये।
ऐसै एक आतमा में मूरति अनेक भाँति,
मूरति अनेक ब्रह्म एक करि जानिये।

पं० सुधाकर शुक्ल

जन्म-सन् 1920 ई०, निर्वाण-सन् 1985 ई०

विशेष :- संस्कृत तथा हिन्दी के अनेक महाकाव्यों एवं खण्डकाव्यों के रचयिता। ईसुरी पुरस्कार तथा म०प्र० शासन से सम्मानित प्रसिद्ध साहित्यकार ।

(किरनदूत खण्डकाव्य से कतिपयछन्द)

अलका रस की नलिका सुकलित कल्पद्रुम की कलिका सी,
जहँ विचरत चारहुँ वेद पुरनि पूरत पुरान पुरकासी।
आपै अलका बलिजात कि अमरावति आरती उतारे,
जेहि सनमुख अगनित फनिपति मनिवति भोगवती छवि छारै।
अलका के कलित कछार कलुस कुल छार छार करि डारैं.
जहँ रौंथत बैठे हिरन करत बहु विपिन बराह बहारैं।
कहुँ सिसकत ससक समूह जूह बनरोजन के उछलत हैं,
बक चित्रक चतुर सियार बाघ बहु सारदूल किलकत हैं।
जहँ सहज सिद्ध द्विज बसत कपिल मुनिवत सत्कारज वादी।
जहँ बरसन बैठे करत कि दरसन बिरत बिसेस कनादी।
जहँ पाणिनि ही में मिलत परसपर प्रत्यय-लोप, न वन में,
कवितन में लिखत विछोह न लखियत जहँ कि जुबक जुबतिन में।
कमनीय द्रुमन सन बलित सुमनसन कलित ललित लतिकासी,
अलि! अलिकुल संकुल कोकिल को कुल कुहकत डाली डाली।
मरकत-भ्रम भरत करीर-कुंज कम करत मनन मनि-सोभा,
बोलत अविकल कलविंक सुनत धुनि धुनत धनद-वन छोभा।
घर घर बुध, पै जारज न, स्वकारज-रत, आरज पथ गामी,
द्विजपति बहु बसत उदार तदपि अनुदार न गुरुतिय-गामी।
तिहि छिति छलछिद्र छिपाउ न तनकउ ताउ तिरस्करिनी के,
सुरपुर सरबर किम करइ सुधाकर सुघर-धाम धरनी के।
यों रुचिर चराचर वर विरंचि की रचना सुचिर सही है।
एकइ बगिया के फूल सबई हमही सों मही उमही है।
जे विहरत जहँ जग जीउ तहाँ ते बिहरैं रहैं सुखारी,
फिर विरथा बैर विरोध सबहि जब इक आतम तमहारी।

(सौजन्य द्वारा - श्री पंकज शुक्ल, कवि कुलाय, दतिया म०प्र०)

डा० मुंशीलाल पटैरिया 'शशिधर'

जन्म — दिनाँक 1-9-1913 ई०

शिक्षा — एमं. ए. (हिन्दी, संस्कृत), साहित्यरत्न, विद्यावाचस्पति।

विशेष — अवकाश प्राप्त प्राध्यापक। कवि, कहानीकार, उपन्यासकार, अनेक हिन्दी काव्यों के प्रणेता। बुन्देली रामायण पर सा० बा० रामचरण हयारण 'मित्र' पुरस्कार से पुरस्कृत। काव्यकलाधर की उपाधि से विभूषित।

सम्पर्क — रिछरा फाटक, दतिया (म०प्र०)

"मेघदूत का भावानुवाद"

(कतिपय छन्द)

पवन जल धूमाग्नि निर्मित सहज जड़ बादल कहाँ,
प्रेमियों से योग्य प्रेषित प्रिय सँदेशा कल कहाँ।
किन्तु उत्सुक यक्ष ने जड़ मेघ से की याचना,
उचित अनुचित समझ पाते हैं न जन वश कामना॥ 5 पू०॥

पुष्करावर्तकज सुरपति प्रमुख जन हे कामतन!
भाग्य-विरही आज याचक मैं तुम्हारा श्रेष्ठ घन।
की गई निष्फल विनय भी सत्पुरुष से श्रेष्ठ है,
अधम से परिपूर्ण कामा याचना न वरेष्ठ है॥ 6 पू०॥

सरित निर्विन्ध्या लखोगे पंथ में कल नादिनी,
मेखला व्दिज पंक्ति जिसकी चाल भी उन्मादिनी।
भँवर नाभि प्रदर्शिता सरिसंग कर लेना सुतन,
क्यों कि हाव विलास ही घन! नारियों का रति कथन॥28पू०॥

अधिक श्रम से अति थकित हो, जायगी चपला प्रिया,
सुप्त कलरव भवन छत पर रोक लेना गति क्रिया।
और फिर रवि उदयपर पथ पूर्ण कर देना सुतन!
मित्र कारज कभी भी होते न मंथर गति सुजन॥38पू०॥

अपहरण जब तुम करोगे सरित नीला जल वसन,
वेत शाखा कर गहे सी तीर कटि तर नग्न तन।
उस सरित का त्याग तब अति कठिन होगा सरसघन,
कौन रसिक समर्थ तज दे कामिनी को, लख जघन॥ 41 पू०॥

डा० रामेश्वर प्रसाद गुप्त

जन्म तिथि — 21-1-1944 ई०

पिता का नाम — श्रीयुत रामभरोसे गुप्त (नौगरइया) ।

शिक्षा — एम० ए० (संस्कृत, हिन्दी), पी- एच० डी०, स्वर्णपदक प्राप्त ।

पद — आचार्य एवं अध्यक्ष (संस्कृत-विभाग), शा० स्नातकोत्तर महाविद्यालय दतिया (म०प्र०) ।

विशेष — शिवाजी-महाकाव्य एवं अनेक काव्यग्रन्थों के प्रणेता ।

सम्पर्क — सिविल लाइन्स, दतिया (म०प्र०) ।

-: "सवैया-छन्द" :-

कौन सुजान बखानतौ प्रीति की रीति जो कान्ह ने जोरी न होती ।
गोरस धाम ये मानतौ कौंन, जो माखन चाखन चोरी न होती ।
प्रेम की बान को जानतौ को, ब्रजवीथिनि जो बरजोरी न होती ।
को पहचानतौ श्याम को जो, बरसाने की बाबरी गोरी न होती ॥

काहे को राधा सुसाधती कान्ह को, प्रीति जो थोरी हू थोरी न होती ।
काहे को जानती मानती काहे, जो सैंन सों नैन की चोरी न होती ।
काहे को होती निकुन्ज में केलि, जो प्रीति बहोरि निहोरी न होती ।
काहे को कारे पै रीझती गोरी, जो गाँठ हियेहू की छोरी न होती ॥

माखन की मटकी झटकी पटकी नटकें धर फोरी न होती ।
नैनन नैन मिलाय के जो कहुँ, कीन्ही हियेहू की चोरी न होती ।
हाय हियौ हरषाय लुभाय नचायते में बरजोरी न होती ।
तौ मुरलीधर की धर पीर, अधीर अहीर की छोरी न होती ॥

फागुनी राग में लागौ जियौं, जब तें मन काम की आग लगी है ।
श्याम के रंग में रीझबे की, कछु भीजवे की मन में मचली है ।
आनन इन्दुपै आय के प्रेम प्रमाद की छाय गई बदली है ।
रंग भरी पिचकारी ले, मीठी सी गारी को सोच के गोरी चली है ॥

भारी उछाह भरौ मन में, मग में पग प्रेम के सूधे न पाये ।
औचक ही मन मौज की फौज ले, गोरी के सामने श्याम जी आये ।
नैन सों नैन की बात परी, बगरी पिचकारी सँभारी न जाये ।
श्याम के रंग में डूबी किशोरी, किशोरी के रंग में श्याम समाये ॥

श्री डी. डी. सिंह चंदेल "पीयूष"

जन्म — 15 अगस्त सन् 1934 ई०

जन्म स्थान — ग्राम–पेराजोर, जिला कानपुर (उ०प्र०)

पिता का नाम — स्व०, श्री प्रयाग सिंह चंदेल

विशेष – अनेक काव्य कृतियों के रचयिता एवं 'साहित्यकला विद्यालंकार' से सम्मानित।

सम्पर्क — पकोरिया महादेव मुहल्ला म. नं, 15 दतिया। (म०प्र०)

-; कुन्डलिया - छन्द :-

–: श्री कृष्ण–वंदना :–

श्री कृष्ण वसुदेव सुवन, देवकी सुक्ख धाम।
स॰ बुद्धिहिं वर दीजिये, हिय प्रकटे प्रभुकाम ॥
हिय प्रकटे प्रभु काम, अज्ञान–अनल बुझ जावे।
ज्ञान ज्योति से फिर, सुखद धाम मिल जावे ॥
'चंदेल' करत विनय, नित्य करूँ तेरा – अर्चन।
हे अशरन शरण्य, श्री कृष्ण – वसुदेव सुवन ॥

"कर्म–भेद (श्रीमद्भगवद्गीता)" ४/१६

गीता में हरि ने कहा, कर्म, अकर्म, विकर्म।
ज्ञानीजन जिन से वहीं, कर्म मर्म के धर्म ॥
कर्म मर्म के धर्म, वेद – प्रणीत पहिचानें।
नित अकर्म के भाव, ते अहं तत्त्व न मानें ॥
कहें सुकवि 'चंदेल' ये गीता हि तत्त्व गहन।
जिसमें हरि ने कहा, इनमें मोहित विद्वज्जन ॥

कर्म–भेद (श्री योग दर्शन) कैवल्यपाद ४/७

कर्म मर्म के धर्म में, कर्म भेद हैं चार।
पाप–पुण्य दो मुख्य हैं, और अधः अनुसार ॥
और अधः अनुसार, जो पुण्य–पाप संयुक्त।
चतुर्थ वह जानिये जो पुण्य पाप से मुक्त ॥
कहें सुकवि 'चंदेल', जे कर्म निष्कामयुक्त।
कर्मों की दुनियाँ में, ते पुण्य, पाप से मुक्त ॥

पं० श्री जगदीश शरण विलगइयाँ

'मधुप' द्विवेदी'

हास्य-रसायनम्

जन्म —- श्रावण शुक्ल ७ शनिवार संवत, १९९३ वि०

शिक्षा — एम० ए० (संस्कृत), बी० टी० विद्यावाचस्पति, साहित्यालंकार, काव्य रत्न,

व्यवसाय — उच्च श्रेणी शिक्षक ।

विशेष — देश की अनेक पत्र पत्रिकाओ में कविताओं तथा लेखों के माध्यम से प्रकाशित । अनेक प्रकाशित एवं अप्रकाशित रचनायें ।

सम्पर्क सूत्र — श्री चामुण्डा तन्त्र संस्थान, दतिया (म०प्र०)

सब रस में है हास्य रस, नव रस का श्रृंगार ।
हास्य सुरस को जानिये, सब सुख का अवतार ॥
सब सुख का अवतार, हार हीरों का मानों ।
बिना मोल यह मिले, तनिक इसको पहचानो ॥
कहत "मधुप" महिदेव, स्वास्थ्य का सच्चा रक्षक ।
चिंता, रोग, विकार, सभी का सत्वर भक्षक ॥
गप शप कर हँस लीजिये, खूब ठहाका मार ।
बिन पैसों के मिल रहा, खुशियों का अंबार ॥
खुशियों का अंबार, रात - दिन पास तुम्हारे ।
हरता सभी विकार, खोल नस-नस के द्वारे ॥
कहत "मधुप" महिदेव, हास्य का जग में झंडा ।
करता सब दुख दूर, चला कर अपना डंडा ॥

श्री रणवीरसिंह चौहान

जन्म — 1 जनवरी सन 1927 ई०

पिता का नाम — श्री बल्देव सिंह

शिक्षा — एम० ए०, बी० एड०

विशेष :– सेवनिवृत्त प्रधानाध्यापक। प्रौढ़ एवं सहज साहित्यकार, भावना प्रधान रस सिद्ध कवि।

सम्पर्क :– टौरिया की हवेली, होलीपुरा, दतिया (म०प्र०)

"कामना"

मम कामना है प्रभु प्रेम की ही,
सरिता में सदैव नहाया करूँ।
मुझे और से काम न हो, मन में,
मनमोहन को ही रिझाया करूँ॥
जिस पर कुल विश्व विमोहित हो,
वह राग अनूपम गाया करूँ।
हंसता रहूँ जीवन में अपने,
नित दूसरों को भी हंसाया करूँ॥

जिन्दादिल

जीना जग में हो, हंसी खुशी से बिताओ दिन,
चिन्तातुर सूरत मनहूस की निसानी है।
सूर्य हंसता है, तो प्रकाश दुनिया को देता,
चाँद हँसता है तो आभा आसमानी है॥
हँस मुख मनुज हंसाता मित्र मन्डली को,
प्रेमानन्द पुष्प वरसाती हंस वानी है।
'सिंह' कवि कहते हैं खूब हंसों, मस्त रहो,
जिन्दगी में जिन्दा दिल होना जिन्दगानी है॥

श्री अनन्त राम गुप्त (अलक लड़ैती शरण)

जन्म — 5 अगस्त 1934 ई०

शिक्षा — मिडिल।

विशेष — अनेक काव्य कृतियों के रचयिता, एवं कवि-तथा दार्शनिक विचार धारा के सहज कवि।

सम्पर्क — शिक्षक, ग्राम-बड़ैरा, जिला-दतिया,

"द्वादश ज्योतिर्लिंग"

दोहा

सोमनाथ सौराष्ट्र में, निकट सिन्धु पहिचान।
प्रभासक्षेत्र यासे कहें, वेरावल स्थान ॥ 1 ॥
मल्लिकार्जुन शैल श्री, आँध्रप्रदेश के माँह।
कृष्णा नामक है जिला, कृष्णा सरिता गाँह ॥ 2 ॥
महाकाल उज्जैन में, क्षिप्रा सरिता जान।
राजा विक्रम से भये, श्री कृष्ण गुरू गान ॥ 3 ॥
ममलेश्वर तट नर्मदा, जिला खण्डवा जान।
स्थल ओमकार नाथ से, आठ मील परिमान ॥ 4 ॥
केदारनाथ गंगा निकट, खण्ड उत्तरामध्य।
दसक मील पर्वत चढ़ै, गौरी कुण्ड सनिद्ध ॥ 5 ॥
श्री भीमशंकर रहे, भीमा नदि के तीर।
जहँ सह्याद्रि महाराष्ट्र में, डाकिन ग्राम बसीर ॥ 6 ॥
बिश्वेश्वर गंगा निकट, काशी पुरी बखान।
संग बनारस भी कहें, जानत सकल जहान ॥ 7 ॥
त्र्यंबक गोदावरि निकट, ब्रह्मगिरि बिख्यात।
नासिक से मोटर मिलै, जाही से सब जात ॥ 8 ॥
बैद्यनाथ श्री देवधर, हैदराबाद बखान।
रावण के इतिहास सों, जोरै प्रीति महान ॥ 9 ॥
नागेश्वर गुजरात में, व्दारावति के पास।
पहले दारुक बन रहौ, अब मनुजन को बास ॥ 10 ॥
रामेश्वर रामेश्वरम्, दक्षिण भारत छोर।
कथा जुरी श्री राम सों, सेतु-बन्ध को शोर ॥ 11 ॥
घुश्मेश्वर शिवलिंग है, जिला दौलताबाद।
आँध्रप्रदेश प्रदेश है, वेरुल ग्राम प्रसाद ॥ 12 ॥

श्री सियाशरण भट्ट 'बज्र'

जन्म — 16 अगस्त सन् 1943 ई०

शिक्षा — हाईस्कूल ।

विशेष — भक्तिभाव से ओतप्रोत रचनाओं के प्रणेता ।

व्यवसाय — नगरपालिका, दतिया में कार्यरत ।

सम्पर्क सूत्र — धमताल पुरा, दतिया (म०प्र०)

विपत–विडारन–स्त्रोत्र

बिना कृपा के आपकी, त्रिभुवन हिले न पात ।
शक्तिपुंज जननी जगत, आप स्वंभू मात ॥
देव करत सब वंदना, चरनन में धर ध्यान ।
आपहि कृपा कटाक्ष सौं, उपजौ सब में ज्ञान ॥
समग ज्ञान विज्ञान की, आप अधिष्ठा मात ।
मो जैसे अनविज्ञ पै, धरो आपको हात ,।
वरद हस्त पाकें रती, परबत सी हो जात ।
धन्यभाग्य मोखों मिली, मात कृपा सौगात ॥
भोर होत लख भानु खों, गुरुपद चित में देय ।
विपत विडारे और की, कुमति घुसे न गेह ॥
प्रति दिन जा पद खों पढे, अष्टोत्तर शत–वार ।
कृपा पाय माँ की सदा, वानी करें विहार ॥

संत सनातन की नगरी, और दीप दिलीपत नें बसवाई ।
भव्य भावना भावानन्द जी, दास करी जिनकी सिवकाई ॥
जा नगरी के भाग्य बड़े, जो राष्ट्रगुरू ने कीर्ति कमाई ।
दुनियाँ सें दतिया बड़कें, जहाँ सौम्य शुभाषित ब्राजी माई ॥

श्री नर्मदा प्रसाद ज्योतिषी

(मानस मराल)

जन्म तिथि — माघकृष्ण दशमी, सं० 1993 वि०

जन्म स्थान — दतिया

पिता — श्री हरचरण

शिक्षा — विशारद रत्न

व्यवसाय — भूतपूर्व शिक्षक, अधुना मानस प्रवचन एवं ज्योतिषकार्यरत।

विशेष — काव्यकला एवं तन्त्र में अभिरुचि।

सम्पर्क — भरतगढ़, दतिया

सवैया

गोद में लाय के मातु कहें, प्रिय लाड़ली क्यों नहिं पीवत क्षीरा।
हूं अबही तेरो व्याह रचाय, अधीर न हो मन आनहु धीरा।
जाय प्रसाद गोविन्द के मन्दिर, ग्रंथ बनाय दई पट चीरा।
सत्य व प्रेम के भाव पगी, बनी मोहन की मन मोहनी मीरा।

नाम-निरन्तर नाम जपूँ हरि का, प्रभु नाम की माला फिराता रहूँ।
रूप-लखूँ रूप सदा गोविन्द प्रिया तुम्हरे पद पुष्प चढाता रहूँ।
लीला-कथा तेरी जहाँ में हमेशा सुनूँ तेरी लीला में हरदम सिराता रहूँ।
धाम-वृन्दावन धामप्रसाद फिरें, तेरा जूठन सदा ही में पाता रहूँ।

नव सदा श्रृंगार सजाये के कृष्ण, बनो आनन नील सी कंजकली।
सुरंग सी सारी सुशोभित अंग, छवि देखी मनोज की बुद्धि छली।
सखि आन सखी न परी पहचान, प्रसाद भनै छवि एन भली।
रति कोटिन देखि लजाय रही, जब कान्त बने वृषभान लली।

याचना है प्रभु के पद सो, युग और सदा हुलसाते रहें।
गाते रहें गीत सदा सबही, दुख द्वन्द्व सदा घबराते रहें।
आते रहें लोग उमंग भरे, रस रंग खुशी बरसाते रहें।
आस यही जो प्रसाद की है, चिरकाल ये प्रेम के नाते रहें।

दतिया-काव्य-धारा "द्वितीय भाग"

गद्यकाव्यधारा–तरंग

क्र.	रचनाकार	रचनाशीर्षक	पृष्ठाँक
1	महाकवि दिमान श्री कम्मोदसिंह	स्मरण	13
	कविवर श्री गदाधर भट्ट	स्मरण	13
2	श्री हरिमोहन लाल श्रीवास्तव	जीवन	14
3	डा॰ एच. पी. गोस्वामी 'मानस विश्वास	रसाभास	15
4	श्री बी. मरिया कुमार	लव एण्ड सिगरेट्स	16
5	प्रो॰ पी. आर. शुक्ल 'रवि'	अस्मिता की खोज में	20
6	डा॰ निलय गोस्वामी	परितोष	21
7	श्री शैलेन्द्र बुधौलिया	'सर्प है यह आदमी की देह में'	22
8	कुँवररमाकान्तपाल सिंह 'रमन'	मेरे आराध्य	23
9	श्री विद्यासागर नामदेव 'सागर दतिया वीं'	छोटी सी कविता	25
10	श्री वीरेन्द्र शर्मा	रामराज्य	26

स्मरण

महाकवि दिमान श्री कम्मोद सिंह

जन्म सं०— 1905 वि० निर्वाण—अज्ञात।

जन्म स्थान— बड़ौन कला (दतिया)

रचना— 3613 छन्दों में प्रेमसुधानिधि काव्य का सृजन,।

कवित्त

हंस सुता तट कुंज कुटीन के,
पुंज घने धन हू न दिखावै।
मध्य बने मनि मंदिर उच्च,
प्रभा ससि सूरज कोटि न पावै।
सौरभ पौन बहै दसहू दिसि,
को कवि जो उपमा कह गावै।
आलिन के संग लाल मनोहर,
नित्त विहार तहाँ मन भावै॥
(प्रेम सुधानिधि)

कविवर श्री गदाधर भट्ट

(संवत् 1875 — 1955 वि०)

निवास — दतिया

[किन्नरगढ़ जन्तोत्सव 'एवं कैंसर-सभा विनोद सहित अनेक काव्यकृतियों के प्रणेता]

चारुतप सनकादि रत हैं, ब्रह्मज्ञानी जब भये।
गे सुनन महिमा सेस सों, आये सु पुन इत छवि छये।
तब है सुनी तिहुँ लोक में, विख्यात यहि सरिता लसै।
शुभ सनकुवा इति नाम सों, जिहि धाम तप हित रिख करै॥

चारु पुन तट पै सुगायक, गाँन करत अपार हैं।
देखत उमंगित मंजु मेलन, मोद जुत सुखसार हैं।
लीन्हैं उमंग मृदंग मंजुल, बीन नाद विसाल हैं।
मुरु चंग सुभ सहतार संजुत चारु सुर सुभजाल हैं।
['किन्नरगढ़ जनतोत्सव']

श्री हरि मोहन लाल श्रीवास्तव

जन्म–जयपुर, 13 अगस्त,1917। जाने–माने शिक्षक और साहित्यकार। हिन्दी–अंग्रेजी में अनेक शैक्षणिक और साहित्यिक कृतियाँ।प्रत्येक विधा में लेखन। गद्य–रचना को कला के रूप में ग्रहण करने वाले। प्रिय विषय हैं गद्यकाव्य, निबन्ध, इतिहास और आलोचना। उल्लेखनीय प्रकाशन–वीरांगना लक्ष्मीबाई: रासो और कहानी, दतिया–दर्शन, स्वतंत्रता के सेनानी, श्री बालाजी, हनुमत हुंकार, मननमंजूषा (उ. प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ से पुरस्कृत), तथा 'राम–रहीम में भेद कहाँ'। 'हिन्दी गद्यकाव्य का आलोचनात्मक इतिहास' (शोध–ग्रंथ) तथा'शैली के प्रयोग' (गद्यकाव्य,लघुकथा क्षणिका एवं हाईकू) महत्वपूर्णअप्रकाशित कृतियाँ हैं। अनेक मानद उपाधियों से विभूषित। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा 'साहित्य महोपाध्याय' उपाधि से अलंकृत।

जीवन

युगों से सुनता आ रहा हूँ कि जगती का यह क्षणिक जीवन 'ज्योतिर्मयी जागृति' का चिन्ह है। मैं तो इस 'सुरभि–सनी सुषुप्ति' की अवस्था कहूँगा, क्योंकि इसकी गुदगुदी गोद में, जहाँ मान ओर मोह का मारुत अंगड़ाइयाँ लें रहा है, लाभ और लोभ की लोरियाँ सुन–सुन कर मैं अपने गौरव शाली गृह को भुला बैठा हूँ। विश्व के इस परीक्षा–भवन में जीवन एक जटिल प्रश्न है और मरण उसका एक अकेला सबका जाना–समझा उत्तर, अथवा संसार के इस समतल मैदान में जीवन एक सरिता है, जिसका उद्‌गम मृत्यु के झरने से हुआ है, अथवा यह साबुन के पानी का एक बुदबुद है, जिसे कोई बालक फूँक–फूँक कर बढ़ाता है, और जो पीछे इसीलिये मिट जाता है कि पहले भी वह कुछ न था। सत्य कुछ भी हो, परन्तु इतना मैं जानता हूँ कि इस लघु जीवन से मेरा बिछोह अवश्यम्भावी है और यही सोचकर तो मैं सिहर उठता हूँ, किन्तु–जब कभी निशा की नीरवता में नींद से भरी मेरी पलकें उन दूसरे दिनों की ज्योति भर लाती हैं, और मैं, प्यार और प्रसिद्धि की होली जलते देखता हूँ। फिर अचानक जीवन के संगी–साथी पतझड़ में गिरने वाली पत्तियों की भाँति वारी–वारी से विलीन होते दिखाई देते हैं, और तब मैं—अपने मन को ढाढस बँधाने लगता हूँ कि मेरे तन–तरुवर के भी सब पात इसी प्रकार झड़ जाने को हैं, तो मैं कातर क्यों बनूँ ? [अप्रकाशित 'शैली के प्रयोग' से]

डा० हरिहर प्रसाद गोस्वामी

('मानस विश्वास')

जन्म —1 जनवरी, सन् 1939 ई०
शिक्षा — एम० ए०, पी–एच० डी०
पद — प्राध्यापक (हिन्दी विभाग) शा० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया।
विशेष — अनेक–स्फुट गद्य-कविताओं, मानसग्रन्थों एवं उपन्यासों के प्रणेता। प्रसिद्ध मानस प्रवक्ता।
सम्पर्क — मानस मन्दिर, चूनगर फाटक, दतिया।

रसाभास

नील गगन – एक सज्जित रंगमंच।
घनों का गुरू गम्भीर गर्जन – ध्वनियों
से युक्त वाद्य यंत्र।
कौंधते विद्युत कलाप – अप्रतिम
प्रकाश केन्द्र।
इतस्ततः छिपी – छितरी बदलियाँ–
पार्श्व गायिकाएँ।
और श्यामल – सुन्दर – सजीले मेघ –
अनेक पात्र।
मृदु मंथर गामिनी मलयानिल
नायक के कोमल कर पकड़ – अपने
प्रणयाभिनय में रत हैं।
और अभिनीत हो रहा है
वर्षा नायक – नाटक।
पर पृथ्वी के फर्श पर बैठे हुए दर्शक
ऊब रहे हैं – इधर उधर उठकर,
भाग रहे हैं – शोर मचा रहे हैं।
शायद वे इस नाटक से अभिभूत नहीं हुए।
देखकर द्रवीभूत नहीं हुए।
कदाचित् उनका
साधारणीकरण नहीं हो पाया है।

श्री बी० मरिया कुमार

पिता का नाम :- श्री बी० मरिया दास

जन्मतिथि- 5-4-1958 ई०

जन्म स्थान :- हुबली-धारवाड़ा (कर्नाटक)।

शिक्षा :- बी० एस० सी०, एम० बी० ए०, डी० पी० एम०

व्यवसाय :- पुलिस अधीक्षक दतिया।

रुचि :- काव्य एवं साहित्य लेखन, चित्रकला।

सम्पर्कसूत्र :- पुलिस अधीक्षक निवास, सिविल लाइन्स, दतिया (म०प्र०)

लव एण्ड सिगरेट्स

हवा के बैक ग्राउण्ड पर
सिगरेट के धुयें से
मैं हमेशा चित्र बनाता हूँ।

सिगरेट पीते समय
जलती हुई सिगरेट छीलती है,
वृत, वक्रता, रेखाकृति
ग्राफिक्स एवं क्यूबिक्स
और विश्व का मानचित्र।

सिगरेट बुझ जाती है,

मैं दूसरी सिगरेट पीता हूँ
प्रज्ज्वलित सिगरेट
रेखांकित करती है, फ्रेसकोस, प्रोफाइल्स
टेवलो, सिल्हौटी
और नारी का अंग विन्यास

सिगरेट बुझ जाती है।

मैं एक और पीता हूँ,
दमकती तम्बाकू

रचनायें

प्रकाशित :– 1. फन टाइम्स इन इंगलिश लैंगवेज
2. दि सै फिनोमेनन आफ नेस्टरिज्म
3. मरियास क्विज बुक
(प्रेस में)

अप्रकाशित :– 1. थियोरी आफ पॉक्स एण्ड एन्टीपाक्स
2. स्केवेयर रूट फ्राम स्केवेर
3. हाइपोथीसिस आफ गोस्पाटिकन
4. स्फुट कवितायें, नाटक एवं कहानियां

LOVE AND CIGARETTES

I draw pictures
with fuming smoke
Against the airy back–ground

As I smoke
the cigarette chisels
whorls, curves, lines
And graphics and cubics
And cosmic contours.

Tobacco ends.

I lit another,
the glowing cigarette
Sketches frescos, profiles
and tableau, silhouette.
And feminine postures.

Tobacco ends.

And I kindle one more.
The gleaming nicotine

चित्रित करती है, दुबले हाथ,
बिखरे बाल, लम्बी टांगें
रसीली कमर और नसीले नितम्ब
और उसके सब कुछ..................

सिगरेट बुझ जाती है।
मैं फिर पीता हूँ, और पीता हूँ
आनन्द और उल्लास चरम सीमा पहुँचने तक
हर तरह अनुभव करता हूँ।

मुझे कैंसर हो जाता है।
मेरे मरने के बाद, मेरे मित्र जन
मेरी शव पेटिका में
सिगरेट रखते हैं।

अन्तिम इच्छानुसार
मेरी समाधि पर यह लिख दिया जाता है
प्यार करने के लिये
इस आदमी ने सिगरेट पी।

अनुवादक–डा० राज गोस्वामी

outlines slender hands
flowing hair and long legs
Thinner waist and voluptuous hips
And her very womanly essence.

Tobacco ends.
I smoke and smoke
Till I experience
Orgies and climaxes.

And I catch cancer.

After my death
They keep cigarettes
In my coffin.
As per my last wish
The epitaph on my grave reads,
" Here lies the man
who smoked for love. "

प्रो० पी० आर० शुक्ल

जन्म— 6-6-1947 ई०

शिक्षा — एम० ए० (समाज शास्त्र)

पद — प्रवक्ता, समाजशास्त्रविभाग, बुन्देलखण्ड कालेज झाँसी (उ०प्र०)

विशेष — कवि,कहानीकार, सम्पादक, पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशि एवं अनेक कृतियों के रचयिता।

सम्पर्क — गोविन्द गंज दतिया, (म०प्र) 475661

"अस्मिता की खोज में"

कहाँ जा रहे हो पथिक ?
आत्म सम्मान या अस्मिता की सुरक्षा
या वैभवपूर्ण जीवन की तलाश में ?
लेकिन, ये तो पलायन है, अपने देश से,
स्वयं अपने आप से ।
क्या तुम भूल गये ?
युगाण्डा और फिजी को ?
मत जाओ, वरना तुम्हारी सन्तानें,
इस देश की सन्तानें, तुम्हें धिक्कारेंगी ।
तुम्हारा न कोई वर्तमान होगा
और न कोई भविष्य ।
इसलिए हे पथिक ! रुक जाओ,
पहचानो अपने आप को और सुनो
बदलते हुए वक्त की आवाज ।
इस आवाज में अपनी आवाज मिला दो
और मिटा दो हिटलर और मुसौलिनी के वंशजों को ।
यह प्रजातंत्र है, राजतंत्र नहीं,
यदि अब भी तुम्हारी चेतना नहीं लौटी, तो
वक्त हाथों से निकल जायेगा
और फिर भारत का प्रजातंत्र
शैशवावस्था में ही मर जायेगा ।

डा० निलय गोस्वामी

जन्म तिथि — 23-6-1964 ई०
शिक्षा — एम० ए०, (हिन्दी), पी- एच० डी०
पद — सहायक प्राध्यापक (हिन्दी विभाग) शा० महाविद्यालय, बेतूल (म. प्र.)
विशेष — काव्य सृजन में सहज अभिरूचि।
सम्पर्क — मानस मन्दिर, चूनगर फाटक, दतिया (म० प्र०)

"परितोष"

तुम कहते हो कि मैं
रेलवे स्टेशन की समीप वाली कोठी में
रहता हूँ और सहता हूँ – प्रतिदिन
शोर – सरावा, शीटियों की चीखें,
इंजनों की झुक-झुक-भों-भों,
कभी चप्पलों की खट पट और बूटों की टायें,
कभी मेल और मालगाड़ी की टक्कर का चीत्कार,
तो कभी रात्रि के विक्रांत सन्नाटे में
पिछली खिड़की से आता हुआ
किसी का कुण्ठित सीत्कार।
तुम परेशान होते हो, झुँझलाते हो,
और नया बँगला बनवाने के लिए इठलाते हो।
पर मैं क्या करूँ बताओगे ?
कैसे धैर्य धरूँ, समझाओगे ?
मैं स्वयं ही अपना मकान हूँ,
घर हूँ, द्वार हूँ, व्यक्ति हूँ, परिवार हूँ।
इसी में पढ़ता हूँ, खाता हूँ, पीता हूँ।
और जहाँ भी जाता हूँ साथ लिए जाता हूँ।
और प्रायः नित्य ही ऐंजनों की सीटियाँ,
टक्करें, सोर, शराबा-कोलाहल-चीत्कार
घोड़ों की टापें और फूत्कार,
कहीं दूर से नहीं, कहीं पास से नहीं
अपने ही अन्दर से सुनता हूँ।

श्री शैलेन्द्र बुधौलिया

जन्म तिथि — 23-12-1956 ई०, शिक्षा — बी० ए०
विशेष — सशक्त गीतकार, अनेक व्यंग्य रचनायें।
सम्पर्क — मुड़ियन का कुआ, दतिया

सर्प है यह आदमी की देह में

याद रक्खो जो हुआ मालूम, कि तुम चाहते छूना गगन को,
तो तुम्हारी देह, यैसी कब्र में दफनाऊँगा,
कि जहाँ पर कल्पना दम तोड़ देगी,
और तेरी आत्मा नया मोड़ लेगी,
रूह भी तेरी कहीं मुझसे कभी टकरायगी,
तो हमारी शक्ल से घबड़ायगी
और रुककर के सड़क के मोड़ पर
कल्पना के साथ यह बतयायगी,
कि सामने बैठा वहाँ जो हँस रहा है,
नीचे पापी दुष्ट सबको डस रहा है,
सर्प है यह आदमी की देह में।
मैं इसे वाखूबियत पहचानती हूँ।
इनके नश-नश की कहानी जानती हूँ,
आज तक चुप रह जुलम सहती रही,
पर बहन तुमसे व्यथा यह ब्यानती हूँ,
कि इसकी इस हंसी ने एक दिन मुझको हँसाया था,
और अपने जाल में यैसा फसाया था,
कि आज हाथी जिस्म थाथी है, इसी के गेह में,
सर्प है यह आदमी की देह में।
काश, जो गर देह मेरे साथ होती, चांद तारों से हमारी बात होती।
क्रूर के घर पूर्णिमा को भी अंधेरा व्याप्त होता
और हमारे घर अंमा भी चांदनी की रात होती
त्रास, पीड़ा, यातना, कुण्ठा कसक और वेदना ने,
कर दिया वेवस मुझे मुंह खोलने को
और चुप्पी की घुटन के दर्द से व्याकुल,
तड़क उट्ठे सिले लव खोलने को, कि दोस्त अब भी जा सँभल,
है छल, भरा इस नेह में, सर्प है यह आदमी की देह में।

कुँवर रमा कान्त पाल सिंह

'रमन'

शिक्षा — एम० ए०, पी–एच० डी० शोध छात्र ।
जन्म तिथि — 2 फरवरी 1965 ई०, जन्म स्थान — ग्राम घरावा ।
विशेष — प्रान्तीय सचिव स्व० डा० वृंदावन लाल वर्मा साहित्य प्रचार संघ । विविध पत्र पत्रिकाओं द्वारा काव्य एवं गद्य रचनायें प्रकाशित । गीतों पर कैसेट प्रकाशित ।
सम्पर्क — 150/26 जय निवास, छोटा बाजार दतिया ।

मेरे आराध्य

मेरे आराध्य ! मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ ।
क्यों कि तुमसे भय नहीं है बात फैलने का ।
क्यों कि तुम पत्थर के बने हो ।
इसलिये किसी से कुछ नहीं कहोगे । कुछ नहीं करोगे ।
चुपचाप सुनोगे और फिर मौन रहोगे ।
मेरे देवता ! मेरे ईश! मैं भयभीत हूँ । अपनी जान बचाना चाहता हूँ ।
क्यों कि अभी तक मैं सच नहीं बोला हूँ
और अब तुम्हारे सामनें दिल हलका करना चाहता हूँ ।
"जो सच बोलता है, बागी करार दिया जाता है ।
वह 'सलीब' पर लटका दिया जाता है :
उसे 'विष का प्याला' पीना पड़ता है
और भूख से बच जाता है तो ?
गोली से मार दिया जाता है ।
मैं चुप हूँ ! और डरता हूँ इसीलिये सोता भी नहीं हूँ
क्यों कि मुझे सोने में बड़बड़ाने की आदत है ।
मेरे परमेश्वर ! मेरे कानों में सुनाई देते हैं, भूखे बच्चों के रूदन ।
और आँखों में झूलती है–रासन की दुकान '।
हमारी बिरादरी का दिल है ही क्या
भूख और टूटन के 'वाटरलू का मैदान'।
अब नहीं सहा जाता । क्यों कि लड़ते–लड़ते मैं भी थक जाता हूँ ।
मैं इस मैदान में अपना नेजा फेंक देता हूँ ।
अपने घुटने टेक देता हूँ । मैं डर जाता हूँ ।
पर मेरा गला दवाया जाता है

और हवा में झुलाया जाता है।
मेरी आंख बाहर निकल आती है।
पर मैं दुखी हूँ वह मरती नहीं है ।
देखती है सबकुछ–इसीलिये गालियाँ खाती है।
मेरे प्रस्तर देव ! हरे कागजों के तीनों शेर जब दहाड़ते हैं,
तो मेरा दिल काँपने लगता है।
एक अनजाना खतरा भाँपने लगता है।
हृदय का लावा जब बाहर आता है,
तो–सिर जोड़े जाते हैं, गोल मेजों पर बैठकें होती हैं।
अगले दिन अखबारों में वक्तव्य छपते हैं
अमुक जगह की घटना आतंकवादी क्रिया है।
इसे नेस्तनाबूद कर दिया जाना चाहिये ।
लोहे के डिब्बों में बैठे चीटे दौड़ उठते हैं
एनकाउण्टर की खबर छपती है।
यह उनकी आतंकवाद के विरुद्ध शाही प्रतिक्रिया है।
ओ मेरे खुदा !
तुम तो सब कुछ देखकर भी कुछ नहीं देखते पर एक राज और भी है।
मेरी मौत ही चाहते हो, तभी इसे कहना।
गरीबों की औलाद हरामी नहीं होती, न अनाथालयों में पलती है।
जव ये स्याह पोस, रात के अन्धेरे में
गरीबों की बस्ती में आते हैं
तो हम किसी न किसी दामन पर कीचड़ अवश्य पाते हैं।
फिर भी हम उसे अपनी बिरादरी में रखते हैं, अपनाते हैं।
कैसे–कैसे उल्लू पैदा किये हैं ? गालियाँ खाते हैं।
हलाँकि ये वच्चे सड़कों, और अनाथालयों में पलते हैं।
इन्ही बच्चों को हरामी करार दिया जाता है।
और अपने ही खून को अनजाने में दुत्कार दिया जाता है
पर मैं उन्हें ब्लैक मेल नही करुँगा
क्यों कि मैं उनकी ताकत से डरता हूँ
खैर अब मैं चुप रहूँगा और आज के वाद ।
तुमसे भी कुछ न कहूँगा । तुम्हारा तुम जो भी समझो ।

श्री विद्या सागर नामदेव

('सागर दतिया वी')

जन्म — 1 फरवरी 1960, स्थान — दतिया

शिक्षा — स्नातकोत्तर हिन्दी

व्यवसाय — पूर्व में i T i कालेज ग्वालियर में अनुदेशक रहे एवं वर्तमान में विद्युत मण्डल दतिया में कार्यालय सहायक पद पर कार्यरत।

छोटी सी कविता

एक कवि ने कवि सम्मेलन में
अपनी छोटी सी क्षणिका सुनाई,
तो आयोजक को बड़ी गुस्सा आई।
वे चीख कर बोले —
बस ?
कैसे-कैसे कवि हो गये हैं।
शर्म नहीं आती ?
अरे बेवकूफ ! इतने बड़े कवि सम्मेलन में
कहीं क्षणिका सुनाई जाती !
कवियों के नाम पर कलंक लगाते हो !
इतनी जरा-जरा सी कवितायें सुनाते हो।
अरे तुम तो चार लाइनों में अपनी
कविता कह गये।
लेकिन मैंने तो अपने मुहल्ले वालों से
बदला लेने के लिये जो पैसे खर्च किये थे
वे पानी में बह गये।

श्री वीरेन्द्र शर्मा

जन्म — 22 फरवरी 1955, स्थान— मरिजापुर ।
शिक्षा — स्नातक
व्यवसाय — वस्त्र विक्रय की दुकान, सुपर मार्केट, दतिया में स्थित है ।
साहित्यक गति विधियाँ — विविध पत्र पत्रिकाओं द्वारा प्रकाशित । वर्तमान में 'दतिया युवा साहित्य समिति' के 'साहित्य मंत्री' पद पर कार्यरत ।

राम राज्य

बापू ! अब तो अपने देश में रामराज्य हैं ।
वहाँ – अब पुलिस नहीं है
न्यायालय में न्यायाधीश नहीं
सांसद और विधायक –
शानों शौकत की जिन्दगी विता रहे हैं ।
मुद्रा का चलन और ढलन –
बन्द हो गया ।
डिग्रियों का महत्त्व खत्म हो गया ।
बहुत याद करते हैं वहाँ के लोग आपको
नेताओं के घर !
कार्यालय, मंच
सभी जगह आप होते हैं ।
गाँव के लोग तो दीवाने हैं आपके ।
आपकी ही वेश भूषा में फिरा करते हैं ।
बापू ! व्यवस्था इतनी सुव्यवस्थित है
कि हमने आपको याद किया
उन्होंने आपके पास पहुँचा दिया ।

दतिया-काव्य-धारा "द्वितीय भाग"

गीतकाव्यधारा–तरंग

क्र.	गीतकार	शीर्षक	पृष्ठांक
1	कविवर श्री नवल सिंह प्रधान	स्मरण	28
	संत कवि श्री अँन साई 'अँन'	स्मरण	28
2	स्व० श्री विन्ध्येश्वरी नारायण बुधौलिया 'नीरस'	"शर्म से आँखें झुकी हैं"	29
3	श्री शशि त्रिपाठी	बदरवा बरस गये	30
4	श्री राधेश्याम त्रिपाठी 'शान्त'	असत् में खोजेगा तू सत्य	31
5	श्री महेश कुमार मिश्र 'मधुकर'	रात बीत गई	32
6	श्री मथुरा दास मुद्गल	राखी कौ त्योहार	33
7	श्री हरप्रसाद रायकवार 'जलेश'	वियोगिनी	33
8	डा० कृष्ण विहारी लाल पाण्डेय	पटाक्षेप	34
9	श्री हरि सिंह 'हरीश'	गीत	35
10	श्री गौरी शंकर उपाध्याय 'सरल'	इंसान बदलता जाता है	36
11	श्री दौलत सिंह भदौरिया	'खून' कैसी ये –:	37
12	श्री राम स्वरूप सेन 'रसिक'	विप्लव	38
13	श्री वनबारी लाल शर्मा 'अचल'	शपथ	39
14	श्री रवि ठाकुर	साँझ ये दुलहिन बनी है	40
15	सुश्री सुधाराजा सूर्यवंशी	ओ मेरे विश्वास	41
16	श्री महेन्द्र शुक्ल 'इकदिली'	गीत	42
17	श्री विलास देश पाण्डेय	'आशीष'	43

कविवर श्री नवल सिंह प्रधान

(कविताकाल संवत्. 1870—1930 वि. तक मान्य)

[ब्रजभूमि प्रकाश,' भारत–कवितावली आदि अनेक काव्यों के प्रणेता: । दतिया समथर के दरवारी कवि ।]

परम पुरी बलदेव की, देवन दुर्लभ सोई ।
कुंड एक तिहि ठाँ रचित, बनक मनोहर जोई ।।
" जत्र तत्र देवन के देवल विराजमान,
चार घाट चारों ओर चारु पैरकारी सों ।
सहित सिवार वारि पावन करन वार,
पार पार वृच्छन की वारी छविकारी सों ।
अचवन लेत जामें, सब दुःख दूर होत,
भूर सुख होत, सिर धारै नर नारी सों ।
मंजत ही गंजत अनेक अघ पुंजन कौं,
सोहै 'बलभद्र कुण्ड' मन्दिर पछारी सौ ।
(ब्रज भूमि प्रकाश) ।

संत कवि श्री ऐन साँई 'ऐन'

(संवत् 1849 – 1901 वि०) [दतिया से सम्बद्ध]

[गीता के पद्यानुवाद एवं अनेक स्वतन्त्र काव्यकृतियों के रचयिता]

" जनम घड़े का होत है, माटी का नहिं होय ।
घड़ा नाम मिट जात है, माटी मिटै न कोय ।
माटी मिटै न कोय, जीव कौं ऐसें जानौ ।
जनमत मरत शरीर, घड़े जैसा ही मानौ ।
"अैन" जीव माटी अमर, तीन काल में सोय ।
जनम घड़े का होत है, माटी का नहिं होय ।।
[श्रीमद् भगवद्गीता–पद्यानुवाद[

सौजन्य–श्री रामस्वरुप श्रीवास्तव 'पेन्टर'
दारूगर की पुलिया, दतिया (म.प्र.)

स्व० श्री विन्ध्येश्वरी नारायण

'बुधौलिया' 'नीरस'

पिता — श्री लक्ष्मीनारायण बुधौलिया, (रियासत दीवान, दतिया)

जन्म—सं० 1976 वि०, निर्वाण 4 मार्च 1985 ई०।

शिक्षा — ढाका वि० वि० से डाक्टर होम्योपैथी।

विशेष — काव्य सृजन में अभिरुचि, अनेक स्फुट रचायें।

'शर्म से आंखें झुकीं हैं'

शर्म से आँखें झुकीं हूँ, देख तेरी नग्न काया।
माँ कहो तो आज सारा आशियाँ जाकर जला दूँ।
सारा चमन चौपट किया है, इन हम्हारे मालियों ने।
सर सब्ज करने को दिया था, लूट खाया बागियों ने।
वाह वाह की तालियों से इन्हें सर पर चढ़ाया था।
तुम कहो तो हिमकणों की परत में इनको गला दूँ। शर्म से०।
हर एक पौधे की जड़ों में कलह का कीड़ा लगा है,
जानते हैं सब कि इसमें खाद जहरीला पड़ा है।
हर डगर काँटे बिछे हैं बामियों में नाग बैठे,
सारी जमीं बंजर बना दी कहो तो मैं हल चला दूँ। शर्म से०।
माँ उमा डमरू बजा शंकर भयंकर को जगा दो,
साधना में लीन हों तो एक पल पलकें उठा दो।
बेवसी में मन जलाशय बाँध टूटा जा रहा है
बरदान मिल जाए अगर तो एक दिन में कहर ढा दूँ। शर्म से०।
मदन मस्त बहार का चारों तरफ डंका बजा है।
बेला, चमेली, केतकी मुस्कान की मानो सजा है।
लाख दुर्योधन भले ही आज रंगरगियाँ मना लें।
सौगंध मुस्काये चमन की कल व्याज सबका चुकादूँ। शर्म से०।
पात पीले पड़ रहे हैं अब न झुलसाओ तपन से
गात नीले पड़ रहे हैं पाशविकता की लगन से।
अब न आतताई आँधियो जड़ से उखाड़ो
मैं नयन सावन बनाकर तीर से इनको सजा दूँ। शर्म से०।

सौजन्य — श्री शैलेन्द्र बुधौलिया, मुड़ियन का कुँआ, दतिया

श्री शशि त्रिपाठी

(अवकाश प्राप्त पुलिस निरीक्षक)

जन्म — आश्विन कृष्ण तृतीया, सं० 1983 वि०
पिता — पं० श्री मुन्नालाल त्रिपाठी
शिक्षा — एम० ए०, एल० एल० बी०, विशारद
रुचि — स्वर और काव्य साधना।
सम्पर्क — मातृ श्री मन्दिर कारसदेव की गली, दतिया (म०प्र०)

"बदरवा बरस गये उस पार"

इत बरसत मोरे दोषी-नयना
वरस वरस गये हार वदरवा
घर आंगन के रीते रीते,
सूनी आँखो सावन वीते,
अनजाने पनघट पर तुमने मुझको दिया उतार
दिन दर्पण में सुधि समझाये,
निशि अम्बर पर सुलख लगाये,
करतल पर कपोल को साधे वैठी रूपसि द्वार।
अक्षत आशा चाहक आरी,
आतुरता अविराम तुम्हारी,
कव तक और बँधे रहने दूँ पथ के बन्दन वार।
जल जल दीपक वुझ गये सारे,
रात सोगयी पूरब द्वारे,
उन्मीलित ऊषा ने अपना आँचल दिया पसार।
जब जब पीपी वोले कोई,
अन्तर् मन में डोले कोई,
पथ के पाहुन देख रहे हैं बोझिल नयन उधार।

BVBSSMV

श्री राधेश्याम त्रिपाठी

'शान्त'

जन्म — 14 जनवरी, सन् 1934 ई०।

शिक्षा — एम० ए०, साहित्य रत्न, डी० यू० एम० टी०, कलकत्ता।

विशेष — कला एवं साहित्य समिति, डबरा, (म०प्र०) के संस्थापक एवं अध्यक्ष, अनेक काव्य कृतियों के प्रणेता, प्रौढ़ रचनाकार, भारतीय तथा विदेशी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

व्यवसाय — सहायक शाला निरीक्षक, दतिया (म०प्र०)

सम्पर्क — उषा निवास, डबरा, जिला-ग्वालियर (म०प्र०)।

"असत् में खोजेगा तू सत्य"

न हो पाये जीवन की शाम।
पथिक चलते जाना अविराम॥
अहर्निशि चलने का अभ्यास।
पथिक करना ही जीवन-साध॥
बहे श्रमगंगा मस्तक मध्य।
चला चल बिना किये विश्राम॥
न समझो यात्रा का अवसान,
अभी है जीवन लक्ष्य सुदूर।
अकेले ही तय करना है-
थकन का कैसा होता नाम॥
सूर्य, गति से ही बना महान्
दिशाओं को जो लेता नाप।
धरा में धैर्य, सिन्धु-गाम्भीर्य
हिमालय में दृढ़ता निष्काम॥
असत् में खोजेगा तू सत्य,
और नश्वरता में अमरत्व।
दानवों के समाज के मध्य,
खोज लेगा देवत्व ललाम॥
द्वेष में प्रेम, क्रान्ति में शांति,
पराजय में जय का शुभ घोष।
लिये युग परिवर्तन की शक्ति,
बनेगा राम और घनश्याम॥
पथिक चलते जाना अविराम॥

630

श्री महेश कुमार मिश्र

जन्म तिथि — आषाढ़ कृष्ण 6 संवत् 1998 वि०

शिक्षा — बी० म्यूज०, आई० जी० डी०

व्यवसाय — उच्च श्रेणी शिक्षक ।

बिशेष — चित्रकार, संगीतकार, पुरातत्त्व लेखक एवं संस्कृत, हिन्दी, उर्दू तथा बुन्देली के सुकवि, आकाशवाणी के अनुमोदित गीतकार ।

सम्पर्क — पकोड़िया महादेव, दतिया ।

"रात बीत गई"

रात बीत गई ।
रात बीत गई-अँधियारे की पछीत भई ॥
रात बीत गई ॥
स्योंरी सी धरती की, ललयागइ कोर,
पूरब नें ओड़ी जरतारी की खोर ।
मिटौ तारिन कौ जोर,
बिदा हो गई चकोर,
पौन सीत भई,
पौन सीत भई, रोम रोम में प्रतीत भई ।
रात बीत गई ॥ 1 ॥
सोने से दमक उठे रुखन के पात,
डार पै चिरइयन के जोड़ चौंचयात,
कभउं तरें उतरयात,
कभउं चैंगुआँ चुनात,
पनप प्रीत रई ।
पनप प्रीत रई, तन-मन खौं कर पुनीत रई ।
रात बीत गई ॥ 2 ॥
खाटन खों छोड़, हार पौंच गए किसान,
पनिहारी कुअलन पै लगी आन-जान,
सास झार उठीं थान,
बहू कूट उठी धान,
मान रीत नई ।
मान रीत नई-मधुकर कौ नेह जीत रई ।
रात बीत गई ॥ 3 ॥

श्री मथुरा दास मुद्गल

जन्म — 15-2-1925 ई०

शिक्षा — शास्त्री, एम० ए०

व्यवसाय — अवकाश प्राप्त अध्यापक।

विशेष — अनेक स्फुट काव्य कृतियों तथा एकांकी नाटकों के रचयिता।

सम्पर्क — बसई, जिला दतिया (म०प्र०)

'राखी कौ त्योहार'

रिम झिम रिम झिम झरै बदरिया, ठंडी उड़ै फुआर। आयौ०।
अलियन गलियन में भन्नारये, प्यारे चकरी भौंरा।
चिगन मिगन रैंकें रेंचकुआ, चैंकें बड़े हिंडोरा।
रधिया रमुआ धरैं मिचक्की, हलै नीम की डार। आयौ०।
सरग धार ऊपर सें गिर रइ, रुकत न नैकउ मेहो।
टपका कौ डर जबर परौ है, जिय घबरावै मेरौ।
घर घर की रग रग में धस गई, सीड़म सीड़ अपार। आयौ०।
मौड़ी मौड़ा परे छोड़ कें, धना मायके दौरीं।
धरी उसारें सबई भींज गई, कण्डी कण्डा मौरी।
चूलौ फूँकत मूछें बर गई, अँखियन घुँआ गुवार। आयौ०।

श्री हर प्रसाद रायकवार 'जलेश'

जन्म — आश्विन कृष्ण 10, संवत् 1983 वि०, शिक्षा — राष्ट्रभाषारत्न।

व्यवसाय — पैन्सनर, सेवा निवृत्त पशु चिकित्सक क्षेत्र सहायक।

विशेष — अनेक प्रकाशित संग्रह एवं अप्रकाशित रचनायें।

'वियोगिनी'

वियोगिनि बनी हूँ मैं पी के विरह में;
यहाँ पर न पी पी पुकारो पपीहा।
सजा साज ऋतुराज आया यहाँ पर,
लतायें लिपट तरुवरों से रही हैं।
कली से जो खिल कर सुमन हो गये,
कोषमधु का मधुप मण्डली ले रही है॥
लता का न तरु हयाँ शिली मुख कली का;
भली भाँति से तुम विचारो पपीहा। वियोगिनि।

डा० कृष्ण विहारी लाल पाण्डेय

शिक्षा — एम० ए०, पी– एच० डी० ।
व्यवसाय — प्राध्यापक हिन्दी, शास० स्नातकोत्तर महाविद्यालय दतिया ।
लेखन — कविता, समीक्षा ।
पता — 70, हाथीखाना, दतिया ।

'पटाक्षेप'

कुहरे ने निगल लीं दिशाएँ,
आओ कुछ रोशनी जुटाएँ ।

यों तो नक्षत्रों का जुड़ा यहाँ मेला,
ताप सहन करने को सूर्य है अकेला,

अपना सलीब खुद उठाएँ ।

ओढ़ लिये हमने बिदूषकी मुखौटे,
अपनी ही दृष्टि में हुए हैं हम छोटे,

दर्पण से आँख क्या मिलाएँ ?

कितनी है सफल वन महोत्सवी बहारें,
कागज पर रोप रंग रंग की कतारें,

शब्दों के गुलमुहर उगाएँ ।

भूल गये अभिनेता अपने संवाद,
रह गये सुभाषित बस लेखक को याद,

अच्छा है यवनिका गिराएँ ।

श्री हरि सिंह 'हरीश'

जन्म — 1-8-1935 ई०, शिक्षा — एम० ए० (हिन्दी), बी० टी०,
व्यवसाय — उच्च श्रेणी शिक्षक ।
विशेष — अनेक काव्यों एवं उपन्यासों के रचयिता । अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित एवं पुरस्कृत ।
सम्पर्क — सुमन साहित्य सदन, नया दरवाजा, गाँधी मार्ग, दतिया (म०प्र०)

'गीत'

तन से मन तक, मन से तन तक, स्वर्णमयी हो तुम ।
रोम-रोम, रेशे-रेशे तक, किरनमयी हो तुम ॥
रूप तुम्हारा छू लेने से मादक हो जाता ।
जिसे निहारो 'तुम' कहलाने का हक हो जाता ।
अंगुली के संकेतों से ही सुकड़-सुकड़ जाती,
कुम्हला जाता रूप तुम्हारा, 'छुई-मुई' हो तुम ॥
तुमने चरण रखे जिस पथ पर फूल वहीं फूले ।
जिस मन में तुम बस जाओ वह जग को ही भूले ।
निकल गई हो जिस पथ से इक बार भूलकर ही,
दर्शक कहने लगे आह भर, हाय दई हो तुम ॥
सभी कह रहे तेरा मुखड़ा चंदा जैसा है ।
तेरा तकना ही फाँसी का फंदा जैसा है ।
भूल नहीं सकता है कोई तेरे नख-शिख को,
बिन पूंछे ही कह देगा वह, जिधर गई हो तुम ॥
रूप तुम्हारा अनगिन भौंरों को चकराता है ।
जाने किन-किन दीवानों से यह टकराता है ।
गोरी बाहें, पिण्डलियों को लख कौन न आह भरे,
पावनता में ऐसे. जैसे दूध धुई हो तुम ॥
देवों ने भी तेरी सूरत देख कहाँ पाई ?
सागर से भी ज्यादा तेरी लगती गहराई ।
जो भी देखे कहे जहाँ में कोई नहीं तुमसा,
अभी विधाता ने रच डाला, पूर्ण नयी हो तुम ॥
सभी तुम्हें अपनाना चाहें, जीने की खातिर ।
प्रेम-प्याला लेना चाहें, पीने की खातिर ।
तुम्हें देखने को केवल सब नयन पसारे हैं,
संमोहन सा डाल रही हो, प्रेममयी हो तुम ॥

श्री गौरी शंकर उपाध्याय

'सरल'

जन्म — 2-7-1938 ई०, (जन्म स्थान — तालवेहट) ।
शिक्षा — एम० ए०, बी० एड०
व्यवसाय — व्याख्याता ।
विशेष — आँखों की महिमा, बुन्देली जोति, भाव भारती आदि अनेक काव्यों के रचयिता। बुन्देली कहावतें, मुहावरे तथा सारशब्द पर शोध कार्य ।
सम्पर्क — व्याख्याता शा० उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सेंवढ़ा, जिला दतिया

'इंसान बदलता जाता है'

विश्वास नहीं होता फिर भी,
इन्सान बदलता जाता है ।
विश्वास छलकता जाता है,
ईमान बदलता जाता है ॥
जग के विकास का जो प्रतिनिधि,
दिन रात बदलता जाता है ।
जगती का सुन्दरतम प्रतिनिधि,
इन्सान बदलता जाता है ॥
भाई भाई सब लड़ै मरें,
सब प्रेम झुलसता जाता है ।
लड़ने को फिर भी अड़े रहें,
क्या यही धर्म सिखलाता है ॥
कृषकों की खेती का अनाज,
पूँजीपति पीसे जाता है ।
बाकी बचता फिर जो अनाज,
भर पेट न रोटी पाता है ॥
पशुओं से श्रेष्ठ हुये नर को,
दानवपन खाये जाता है ।
शोषिकी वृत्ति से ही देखो,
एटमबम गिरने आता है ॥
यह रामकृष्ण की प्रेम-लता,
भौतिकपन लीले जाता है ।
भस्मासुर सा जो अड़ा खड़ा,
अब भस्म हुआ खुद जाता है ॥

श्री दौलत सिंह भदौरिया

पिता का नाम — श्री दशरथ सिंह भदौरिया ।
जन्मतिथि — 8 सितम्बर 1942 ई० ।
जन्म स्थान — जरसेना (मेहगाँव) भिण्ड (म०प्र०)
व्यबसाय — ए. डी. ई. ओ. विकाश खण्ड, दतिया (म०प्र०)
सम्पर्क सूत्र — द्वारा :– रणवीर सिंह चौहान टोरिया की हवेली, दतिया (म.प्र.)

'खून'

फैला है जो राहों में कहो किसका लहू है ।
हिन्दू का लहू है न मुसलमां का लहू है ॥
सिख, पारसी, ईसाई का ये खून न यारो ।
भारत में जो वहेगा मेरी माँ का लहू है ॥

* कैसी ये लड़ाई *

कुछ तो बताओ लोगो है कैसी ये लड़ाई ।
पैदा हो एक माँ से आपस में भाई भाई ॥
दुःख दर्द कुछ वटाले, पर्दा जरा हटाले ।
अव भी समय है यारो अपने को कुछ बनाले ॥
ये जिन्दगी के लमहे गीतों से जोड़ भाई — पैदा हो ....
परछाइयाँ न झाँको मंजिल का कर किनारा ।
बदलो तो युग को बदलो पैगाम ये हमारा ॥
इंसाफ की तराजू इंसान तौले भाई — पैदा हो............
सागर हो या नदियां, झरने भी गीत गायें ।
प्रेमाश्रु से तुम्हारे दुनियां ही भींग जाये ॥
है चार दिन का जीवन कुछ देखने दो भाई — पैदा हो ....
गर दे सको न जीवन, लेने का हक नहीं है ।
अपनों में चार रातें, कटने में शक नहीं है ॥
दिल में जो प्यार है तो, विन मोल बिको भाई .... पैदा हो ....
सव दूर चले जायें वो गर्दिशों के शाये ।
तुम और मुस्करा दो फौलाद पिघल जाये ॥
संगीत को न रोको, संगीन से रे भाई .... पैदा हो ....
सोचो जरा ओ मन से इकवार मेरे भाई ।
कुछ भूल वन गई हो तो माफ करो भाई ॥
कैसा कुरान, गीता से ज्ञान लिया भाई .... पैदा हो ....

श्री रामस्वरूप सैन 'रसिक'

जन्म — 6 अगस्त 1941, स्थान — दतिया, शिक्षा — हाईस्कूल ।

व्यवसाय — नाजिर, न्यायालय, दतिया ।

विशेष — विविध पत्र पत्रिकाओं में काव्य–रचनायें प्रकाशित ।

सम्पर्क — 'बदली साहित्य सदन' शिव गिरि मन्दिर मार्ग दतिया ।

विप्लव–गान

गीत सुनाने बैठा हूँ जलती हुयी वहारों के,
दोष लेखनी को मत देना, विप्लव की अगवानी है ।

आती है आवाज यही मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारों से ।
नैया डूब रही है देखो, नाविक की पतवारों से ।।
मिलते हैं संकेत दूर से, गुम्बद सें मीनारों से ।
पूछ सको तो चलकर पूछो, मौन खड़ी दीवारों से ।।
जिन पर था विश्वास उन्ही ने धर्म-युद्ध की ठानी है । दोष० ।
धरती जलती अम्बर जलता जलता सकल जहान है ।
विस्फोटों से सागर जलता यह कैसा विज्ञान है ।।
नारी को नारी जला रही, घर वन बैठा शमशान है ।
मानवता के सारे रिस्ते भूल गया इंसान है ।।
नारी खुद अपने जीवन की, जलती हुयी कहानी है । दोष० ।
असली नाम रह गया अवतो नकली की भरमार है ।
देख रेख करवे वालों की आँख पड़ी बीमार है ।।
अन्तर्मन से दुखी आदमी क्या होगा संसार का ।
पौरुष नष्ट हुआ जाता है, जीवन के आधार का ।।
आंचल में बच्चा रोता तब, दूध में हँसता पानी है । दोष० ।
चाकू और तमन्चे चलते बीचों-बीच बाजार के ।
सिर विहीन लाशें मिलती हैं किसी मोड़ पर हार के ।।
ऐसे सारे प्रश्न कि जिनके उत्तर उनके पास नहीं ।
प्रश्न चिन्ह को विराम बताते इसीलिये विश्वास नहीं ।।
पहरेदारों की वस्ती में लुटने लगी जवानी है । दोष० ।

श्री वनवारी लाल शर्मा "अचल"

पिता का नाम — स्व० रामचन्द्र शर्मा ।
जन्म तिथि — गुड़ी पढ़वा, सम्वत् 1999 वि० (17 मार्च 1942 ई०) ।
योग्यता — स्नातक ।
प्रकाशित कृतियां — भाग्य की विडम्बना (उपन्यास) सपनों के घेरे (काव्य संग्रह)
सम्प्रति — दतिया में, जल संसाधन विभाग में अधीक्षक पद पर पदासीन ।
सम्पर्क सूत्र — 120 बी, गोविन्दपुरी, यूनिवर्सिटी रोड, ग्वालियर (म०प्र०) ।

'शपथ'

ऐसे बंधन से बांध दिया है तुमने अधरों को,
शायद उठती पीड़ा अब मैं कह न पाऊँगा ।

अनकही कथाओं को बांधूगा मैं,
अब अपने गीतों की पुस्तक में ।
तेरी अभिलाषाओं का चिन्तन,
सदा खुला रहेगा हर मुक्तक में ।।

कभी कभी झूले से दुहरा लेना मेरे गीतों को,
शायद प्रणय गीत अब मैं दुहरा न पाउँगा ।।

असहाय यातनाऐं सहकर भी,
अब तो रहना है मौन मुझे ।
बन्धन से मुक्त न रह पाऊँगा,
जब तक तेरी सौगन्ध मुझे ।।

पर न बांधना बंधन से तुम उन नयनों को,
शायद उठती तृप्ति की प्यास बुझा न पाऊँगा ।

नित चेतना की मांग भरूँगा सांसों में,
तृप्ति की इति कहाँ उच्छ्वासों में ।
विछोह का मिलन होगा उस पार,
दृढ़ निश्चय रहा कहाँ विश्वासो में ।।

पर सपनों की अभिलाषा न कहीं ठुकराना तुम,
शायद ढ़लती बेला की पीड़ा सह न पाऊँगा ।।

श्री रवि ठाकुर

जन्म — 19 सितम्बर, सन् 1963 ई० ।

शिक्षा — स्नातक ।

विशेष — अनेक स्फुट गीतों के रचयिता । पत्रकार । अध्यक्ष, न्यूजसिंडीकेट ।

सम्पादक — 'बुन्देल खण्ड टुडे'।

सम्पर्क — 151/26 जय-निवास, छोटा बाजार, दतिया (म०प्र०) ।

'गीत'

सांझ ये दुलहन बनी है,
तुम नहीं आये ।
ये हवा भी अनमनी है,
तुम नहीं आये ।
लौट चले नीड़ों को पंछी,
दीप जले, लो, आंगन-आँगन,
नैन निहारें राहें सूनी,
सूना-सूना प्यासा जीवन ।
प्यासी मन की रागिनी है,
तुम नहीं आये ।
रात आई भीगी हुई सी,
लेकर सुधियों की पीड़ायें ।
चाँद भी कुछ अनमना है,
उलझी है ये नीहारिकायें,
रूठी-रूठी चाँदनी है,
तुम नहीं आये ।
भोर के सपने नहीं देखे,
टूटते हैं तारे गगन से ।
धूप ने हर छाँह को लूटा,
बैर हो गया है दरपन से,
दोस्तों से दुश्मनी है,
तुम नहीं आये ।

कुमारी सुधा राजा सूर्यवंशी

जन्म — 5-7-1969 ई० पिता — श्री रामनारायण सिंह।
शिक्षा — एम० ए (राजनीति शास्त्र), एल० एल० बी०।
विशेष — प्रकाश्य काव्य संग्रह-बीहड़ के फूल, मुस्कराते आँसू, दर्द तो वहीं है।
सम्पर्क — 157/26 जय निवास, छोटा बाजार, दतिया।

"ओ मेरे विश्वास"

थको नहीं, मत साँसें खींचो, अभी न छोड़ो आस,
अभी बहुत चलना है तुमको, ओ मेरे विश्वास !

अभी तलक, तेरे कदमों को,
चलने का, अभ्यास नहीं था।
कैसी पथ-बाधायें होंगी,
इसका भी आभास नहीं था।

अब तो पथ परिचित है तेरा, फिर कैसा नैराश !
अभी चले ही कितना हो तुम, ओ मेरे विश्वास !

माना तेरे पग घायल हैं,
रस्ता भी दुर्गम है तेरा।
दुःखी हृदय है श्वाँस उखड़ती,
आगे है घनघोर अँधेरा।

थोड़ा और चलो प्रातः का, आता शुभ्र प्रकाश,
अभी न अपना साहस छोड़ो, ओ मेरे विश्वास !

थक कर जब चाहो शीतलता,
छाया बनकर प्राश्रय दूँगी।
तेरे पग-कण्टक समेट कर,
अपने आँचल में रक्खूँगी।

तुम मेरा विश्वास न तोड़ो, होना नहीं हताश,
तेरा लक्ष्य निकट आता है, ओ मेरे विश्वास !

नयन अश्रुओं से सींचूँगी,
मैं तेरी चोटें सहलाकर।
तेरी थकन भुला दूँगी मैं,
अधर-हास में मन बहलाकर।

सँग मैं हूँ चल पथिक चिरंतन, खोज न पंथावास,
चलो, अभी मत थककर बैठो, ओ मेरे विश्वास ॥

श्री महेन्द्र शुक्ल "इकदिली"

जन्म तिथि — 16-12-1954 ई०

शिक्षा — स्नातक।

व्यवसाय — उ० श्रे० शिक्षक।

लेखन विधा — गीत (मात्र सिने टेक्निक्स) एवं-भजन।

सम्पर्क — गाँधी रोड, दतिया।

'गीत'

आना हम इन्तजार करेंगे।
जाने जाना थोड़ा सा प्यार करेंगे।
मुस्करा कर पास आ कर
मन से तुम्हारे एकाकार करेंगे॥
जियें तो तेरे बिना कैसे जियें,
तुम्हीं बताओ भला ऐसे जियें,
दिल की कहानी फिर सुनायेंगे,
तेरी यादों के जले जाँ में दिये,
देखो न बुझ पाये, पहले से आ जायें,
हम भी तभी तो ऐतवार करेंगे॥
आना हम इन्तजार ······ ······ ·········· ॥
तेरे ही ख्वावों से सजाई है,
मेंनें जो दुनियाँ बसाई है,
जागीर तेरी है तू" मेरी है,
तस्वीर दिल ने चुराई है,
गीतों की सरगम से सांसों के वन्धन से,
मिल के मिलाके बे करार करेंगे,
ऐसा न हो कि तुम्ही आओ न,
प्यार की रश्मे निभाओ न,
प्यासा तड़पता रहे ये दिल,
वन करके वदली ही छाओ न,
जब भी तुम आओगे, वाहों में पाओगे,
सपने तभी प्रिये साकार करेंगे,
आना हम इन्तजार करेंगे।

श्री विलास देशपाण्डे

जन्म — 15–1–61 ई० । पिता — श्री रामराव देशपाण्डे ।
शिक्षा — एम० काम० । व्यवसाय — म० प्र० वि० म० दतिया में कार्यरत ।
विशेष — संकलनों में प्रकाशन–बच्चों की मीठी मुस्कान, विविधा ।
सम्पर्क — यशवन्तराव जोशी का बाड़ा, कमाटीपुरा, माधौगंज, लश्कर ग्वालियर.

॥ आशीश ॥

री 'किरन' तू किरन–पुन्ज समान हो ।
भाल तेरा उच्च हो, तू द्वेष से अजान हो ।
भाग्य तेरा श्रेष्ठतम हो ।
बुद्धि तेरी उच्चतम हो ।
तेजस्विता की खान हो ।
भाव मृदुल महान् हो ।
री 'किरन' तू किरन–पुन्ज समान हो ।
भाल तेरा उच्च हो, तू द्वेष से अजान हो ।
माँ तेरी पुन्यतमा हो ।
पिता तेरे दीर्घतमा हो ।
भ्रात तेरे भार वाहक,
यश तेरा प्रतिमान हो ।
री किरन' तू किरन–पुन्ज समान हो ।
भाल तेरा उच्च हो, तू द्वेष से अजान हो ।
युग तेरी आशा लगाये ।
विश्व तेरा योग पाये ।
लक्ष्मी सम्पन्न हर क्षण रहे ।
वह सरस्वती वरदान हो ।
री 'किरन' तू किरन–पुन्ज समान हो ।
भाल तेरा उच्च हो, तू द्वेष से अजान हो ।
मन तेरा एकाग्र हो ।
भाव निर्मल पवित्र हो ।
बुद्धि सेवा भाव तुझ में ।
करसे तेरे दान हो ।
री 'किरन' तू किरन–पुन्ज समान हो ।
भाल तेरा उच्च हो, तू द्वेष से अजान हो ।

दतिया-काव्य-धारा "द्वितीय भाग"

गज़लकाव्यधारा–तरंग

क्र.	रचनाकार	शीर्षक	पृष्ठाँक
1	महाकवि पं० राधालाल गोस्वामी	स्मरण	45
	कविराज श्री हरनाथ वरुआ	स्मरण	45
2	स्व० कुँवर श्री छत्रसिंह 'संतोष' 'निरंकारी'	दिल तुझको दे दिया	46
3	श्री अवध किशोर सक्सेना	मेढक को जुखाम 'अब तो कुछ पानी डलीच दो'	47
4	श्री चन्द्रशेखर मिश्र	प्रार्थना के जबाब	48
5	श्री काजी हसीन उद्दीन कुरैशी	रुक गई याद	49
6	स्व० श्री तफज्जुल अली हसनी	करके गये थे वादा	50
7	श्री ऋषि मोहन श्रीवास्तव	क्या कहें अब	51

---

* काव्य धारा द्रुत सुगति से *

काव्य-धारा द्रुत सुगति से प्रवाहित हो अनवरत ।
संस्कृति साहित्य की संपोषिणी शोभा सहित ।
सर्वदा इसमें सुकवियों की सुवाणी मुखर हो ।
मानवी चिन्तन चिरंजीवी, असुरता हो । विगत ।

राधेश्याम त्रिपाठी 'शान्त'

स्मरण

महाकवि आचार्य पं० राधालाल गोस्वामी

जन्म — सं. 1901 वि०, निर्वाण — सं० 2013 वि० ।

[हिन्दी काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ–'राधाभूषण', संस्कृत काव्य 'सौन्दर्यसागर: तथा अनेक स्फुट रचनाओं के प्रणेता]

"कवित्त"

प्यारे तेरे नैंन हैं न बाण, पै हैं बाण सही,
तब तौ हमारौ हीय तासौं विंध जात है ।
यद्यपि उरोज बीच अनल नहीं है, पै है,
देखत ही ताके जिय तापह्वय जात है ।
राधालाल तेरौ ये रूप है न चुम्बकमणि,
पै ये है चुम्बक, मन लोह खिंच जात है ।
अथवा ये रूप है न जाल, पै है जाल सही,
तब तौ हमारौ मन मीन फँस जात है ।

[राधा भूषण]

कविराज श्री हरनाथ [बरूआ]

जन्म — श्रावण कृष्ण–तृतीया सं० 1953 वि०; निर्वाण–15 मई 1971 ई० ।

जन्म स्थान — ररी, ज़िला–भिण्ड । दतिया में ग्राम–बरापचैरा, इन्दरगढ़ के पास निवास लगभग सन् 1950 ई० से ।

विशेष — अनेक काव्यों के प्रणेता । 'हरनाथ ग्रन्थावली" राजस्थान सरकार द्वारा प्रकाशित ।

'कवित्त'

गोरी गोपिकान के गरे में गरबइयाँ डार,
गैयन के पाछें कबौ धायेंगे न धायेंगे ।
भ्रमर समान गुञ्ज गुञ्ज उन कुञ्जन में,
गीत वे रसीले कबौ गायेंगे न गायेंगे ।
कवि हरनाथ उन प्रेमी प्रेमिकान संग,
मृदुदधिलूट लूट खायेंगे न खायेंगे ।
जे दिना निहारि यही वेदना हमारे हिये,
वे दिना हमारे जानें आयेंगे, न आयेंगे ।

सौजन्य — पं० बासुदेव गोस्वामी, वाणी विहार, भरतगढ़, दतिया ।

स्व० कुँवर श्री छत्रसिंह 'संतोष' (निरंकारी)

जन्म — 15 अक्तूबर 1925, ई० दतिया (म०प्र०)।

शिक्षा — बी० ए०, एल० एल० बी०।

पिता — स्व० श्री दीवान रन्धोर सिंह।

पद — सहायक शाला निरीक्षक, दतिया।

निर्वाण — 18 मार्च 1988 ई० प्रातः काल।

विशेष — खेल, कूद प्रेमी,। संगीत-प्रेमी, पतंग उड़ाना, हॉकी खेलना। उर्दू भाषाओं पर अधिकार।

ग़ज़ल

"दिल तुझको दे दिया"

दिल तुझको दे दिया है, शिकायत किये बगैर,
सर को झुका दिया है, बगावत किये वगैर।
झगड़ों में कुछ मिला है, तो बेचैनियां मिली;
फैला अमन कहाँ पे, मुहब्बत किये वगैर?
जो कुछ करो सही करो, दुनियाँ से मत डरो,
दुनियाँ नहीं रुकेगी, शरारत किये बगैर।
तूफां में कूद बैठे और मुश्किल भी झेल ली,
तो कश्ती भी पार होगी, हिफाजत किये वगैर।
दुनियाँ मिली है प्रेम की, तो छोड़ो घृणा अभी,
कोई न फिर उठेगा, इनायत किये वगैर।
मुझको किसी की क्या गरज, इक तुझ पे नाज है,
जाने ना देगा तू मुझे, रहमत किये वगैर।
जप-तप में क्या रखा है, हूँ मस्ताना ज्ञान का,
मुझको खुदा मिला है, इबादत किये वगैर।
'संतोष' दे, गिरतों को फिर-ऊँचा उठा उन्हें,
इज्जत न होगी औरों की इज्जत किये वगैर।

श्री अवध किशोर सक्सेना

पिता का नाम — श्री बैजनाथ सक्सेना। जन्म तिथि — 10 अप्रेल 1930 ई०

जन्म स्थान — दतिया (गाड़ी खाने के पास, राय जी का मकान)।

रचना काल — सन् 1950 से अबतक।

प्रकाशित पुस्तकें — सूर्य चालीसा, पौरुष पर आस्था, वातावरण खराब हो चला.

विशेष — गीत, गजल, कहानी, एकांकी, व्यंगलेख, आदि अनेक विधाओं में लेखन एवं आकाशवाणी से रचनाओं का प्रसारण।

गज़ल

'अब तो कुछ पानी उलीच लो'

अब तो कुछ पानी उलीच लो, अपनी अपनी कश्ती का,
बर्ना कुफल भोगना होगा, तुमको अपनी मस्ती का।
कान लगा कर सुनते हैं सब, आज हवाओं कीं बातें,
वातावरण खराब हो चला है, अब सारी बस्ती का।
नंगेपन को छिपा रहे सब, ओढ़ लवादा सेवा का,
खूब दिखावा चलता रहता, अपनी अपनी हस्ती का।
सिद्धान्तों की ढाल लगाये, स्वार्थ भावना में डूबे,
घर भरने में लेखा जोखा, करते राई रत्ती का।
माली कांटों में उलझे हैं, पौधे जीने को तरसें,
क्या भविष्य हो सकता है, बगिया की इस कमवख्ती का।

गज़ल

'मेढक को जुखाम'

मेढक को हमने जुखाम होते देखा,
कुर्सी वाले को सलाम होते देखा।
बना जो बड़ा, पर खजूर सा तना रहा,
लोगों ने उसे, बदनाम होते देखा।
राजनीति दाव पेचों का अखाड़ा है,
राजा से रंक, सरे आम होते देखा।
प्रतिभायें कुंठित होकर सड़ जाती हैं,
चमचों का, क्षणों में, काम होते देखा।
सूरज भी तम के घेरे में आता है,
आदमी समय का, गुलाम होते देखा।

श्री चन्द्रशेखर मिश्र

जन्म — 1 जनवरी सन् 1936 ई० ।

शिक्षा — एम० ए०, बी० एड०, एल० एल० बी० ।

पद — प्रधानाध्यापक ।

विशेष — प्रौढ़ रचनाकार एवं समाजवादी विचारधारा के लोकप्रिय साहित्यकार. अनेक गीत एवं गज़लों के रचयिता ।

सम्पर्क — पकोड़िया महादेव, दतिया (म०प्र०) ।

गज़ल

प्रार्थना के जबाव होते क्या ?
देवता बेनकाब होते क्या ?
लाख साकी मिलाये सागर में,
आवे गंगो शराब होते क्या ?

सुगन्ध दें, चुभन न देते हों,
ऐसी किस्म के गुलाब होते क्या ?
रोज ढलते हैं, रोज मुतते हैं,
चन्द्रशेखर खराब होते क्या ?

(2)

वादलों में डूबा चन्द्रमा प्रकाश क्या करे,
जो देश कर्ज में हो वह विकास क्या करे,
न कमाके हि जिसने खाया हो, न ले के ही दिया,
उस आदमी पै अब कोई विश्वास क्या करे ।

सागर दिये हों मूल में, वर्षा ले व्याज में,
ऐसी धनी धरा है, तो आकाश क्या करे ।
आवे हयात बाँट के खुद गरल पी गये,
ऐसे हैं चन्द्रशेखर यह दास क्या करे ।

श्री काज़ी हसीन उद्दीन कुरैशी

("हसीन" दतियावी)

जन्म तिथि — 20–6–1937 ई० ।

पिता का नाम — श्री काजी सरफ उद्दीन कुरैशी ।

शिक्षा — "अदीव कामिल", रुचि — शेरो–शायरी अदव ।

व्यवसाय — सहायक शिक्षक, हायर सेकेन्ड्री स्कूल नं० 2 निवाड़ी ।

सम्पर्क सूत्र — तलैया मुहल्ला, दतिया ।

'गज़ल'

रुक गयी याद आके उनकी, आहे सोजां देखकर ।
आग लगकर रह गयी चाके–गरीवां देखकर ॥

लाल व गुल, सरब व नसरीं, माहे–ताँवा देखकर ।
उनकी जानिव देखता हूँ, रुहे–जानाँ देखकर ॥

अपने जलवों में मुकैय्यद हो रहे हैं आप वह ।
खुद भी वह हैरान हैं, आईनये–हैराँ देखकर ॥

साकिनाने अर्शे–आजम सर व सजदा हो गये ।
खाक के पुतले में शाने–नूरे–यजंदा देखकर ॥

काश वह परदानशीं इकबार होता जलवागर ।
क्या किसी को देखता मैं रुहे जानाँ देखकर ॥

ऐ ख्याले दोस्त तू ही आके, कर तस्कीने दिल ।
दम घुटा जाता है मेरा, शामे हिजराँ देखकर ॥

बढ़ रहीं हैं दिल की मेरी उलझनों में उलझने ।
दिल परीशां है तिरी, जुल्फें परीशाँ देखकर ॥

पालने वाले की कुदरत पर यकीं आ ही गया ।
आतिशे–नमरूद को सहे–गुलसितां देखकर ॥

मौज़ में आकर कनारे, लग गया मैं "हसीन" ।
फिर वहाकर ले चला साहिले से तूफाँ देखकर ॥

सौजन्य — डॉ० नौशाव सुहैल दतियावी

स्व० श्री तफ़ज्जुल अली 'हसनी'

जन्म — 17-7-1952 ई० । निर्वाण — 23 नबम्बर 1992 ई० ।

शिक्षा — अदीव कामिल, बी० ए०, एल० एल० बी०, संगीत प्रभाकर, आयुर्वेद रत्न ।

विशेष — स्मरणीय साहित्यकार एवं संगीतज्ञ । नेहरू, युवा-केन्द्र दतिया में समन्वयक पद पर रहे ।

'गज़ल'

करके गये थे वादा, पांचवे रोज मिलने का,
किसी से सुन लिया होगा, कि दुनियां चार दिन की हैं ।
यही गम है, यही गम है, यही गम, तुम नहीं आये;
न आये तुम नहीं आये ।

तुम्हें आना अगर होता, हजारों बार आ जाते,
तुम्हें आना न था ऐ मेरे हमदम, तुम नहीं आये;
यही गम है, यही गम है, यहीं गम, तुम नहीं आये ।

न तुम आये न चैन आया, न इस दिल को करार आया,
लिपट कर रो दिये जख्मों से मरहम, तुम नहीं आये;
यही गम है, यही गम है, यही गम, तुम नहीं आये ।

तुम्हारे नाम से दुनियाँ, हमें आवाज देती है,
अब इस मंजिल पै आखिर, आ गये हम, तुम नहीं आये;
यही गम है, यही गम है, यही गम, तुम नहीं आये ।

फलक पर चाँद और तारे, जमीं पर इश्क के मारे,
तुम्हारे नाम का करते है, मातम, तुम नहीं आये;
यही गम है. यही गम है, यही गम, तुम नहीं आये ।

न आये, तुम नहीं आये,
नहीं आये, नहीं आये, न आये, तुम नहीं आये,
यही गम है, यही गम है, यहीं गम, तुम नहीं आये ।

श्री ऋषि मोहन श्रीवास्तव

जन्म — 7 सितम्बर 1954 ई० ।

शिक्षा — एम० ए० (समाज शास्त्र, हिन्दी साहित्य), संगीत प्रभाकर, वैद्य-विशारद ।

सम्प्रति — ग्रामीण क्रियात्मक साक्षरता परियोजना में पदस्थ ।

विशेष — प्रौढ़ रचनाकार, अनेक पत्रपत्रिकाओं में प्रकाशित ।

सम्पर्क — 16 वर्मा लेन, दतिया म०प्र० ।

'ग़ज़ल'

क्या कहें अब जिन्दगी में कुछ कहा जाता नहीं ।
बेकहे भी अब तो हमसे यूं रहा जाता नहीं ।

हर तरफ हैं आंधियाँ औ' हर तरफ तूफान है,
किस तरफ जायें भला, अब तो चला जाता नहीं ?

ज़िन्दगी में ढेर से गम मैं लिये जी तो रहा,
एक पल के भी लिये, अब तो हँसा जाता नहीं ।

मेरा हमदम, दोस्त मेरा जब खफा मुझसे हुआ,
उसका मुझसे दूर रहना, अब सहा जाता नहीं ।

प्यार का परिवेश मुझको इस कदर भाने लगा,
रेत की दीवार जैसे अब ढहा जाता नहीं ।

ये जमाना मुझको ताने मारता क्यों जा रहा,
दर्द यह मुझसे 'ऋषि' अब तो सहा जाता नहीं ।

दतिया-काव्य-धारा "द्वितीय भाग"

विविधकाव्यधारा–तरंग

क्र.	रचनाकार	शीर्षक	पृष्ठांक
1	कवयित्री महारानी प्रेमकुँवरि	स्मरण	53
2	कवयित्री भव्वाजू राजकुँवरि	स्मरण	53
3	योगी अनामय जी	स्मरण	53
4	श्री गजराज सिंह खरे 'निर्भीक'	महावीर महिमा	54
5	श्री हरिश्चन्द्र गौड़	जिन्दगी	55
6	श्री प्रकाशचन्द्र शर्मा (विलगैयाँ)	वसंत या स्वतन्त्रता	56
7	श्री राज गोस्वामी	प्रकृति नटी के खेल निराले	57
8	श्री महेश प्रसाद गुप्त 'उमेश'	दीप जला लो	58
9	श्री सन्तूराम उदासीन	'ऐ जवान'	59
10	श्री महेश लाक्षाकार 'अनुरागी'	अन्तर्मन में दीप जला लो	60
11	श्री श्याम बिहारी शर्मा 'श्याम'	नीरस हैं भैया	61
12	श्री रवीन्द्र श्रीवास्तव	'मजदूर'	62
13	श्री मती ममता श्रीवास्तव	'उद्‌वोधन गीत	63
14	सुश्री अर्चना खरे	'शमा परवाना'	64

---

* कैसी नौनी लगत बुन्देलीं *

कैसी नौनी लगत बुन्देली, जैसें नार नवेली ।
संसकिरित की विटिया है जा, व्रज की परमसहेली ।
तुलसी सूर ईसुरी केसव सबके घर में खेली ।
मधुकर कथें जाकी मिठास पै, मी मिठयात जबेली ॥

महेश मिश्र 'मधुकर'

स्मरण

कवयित्री महारानीप्रेमकुँवरि

जन्म—सं० 1945 वि०, दतिया महाराजा गोविन्द सिंह की महारानी ।
(राधाकृष्ण से सम्बन्धित अनेक पदों की रचयित्री)

दोहा

तन मन के आधीन है. मन प्रभु के आधीन ।
राधा औ श्री कृष्ण जू, प्रेम भक्ति तल्लीन ॥

कवयित्री भब्बाजू राज कुँवरि

[बड़ोनकला के जागीरदार भक्तकवि दिमान श्री कम्मोद सिंह की धर्म पत्नी]
प्रमुख काव्यग्रन्थ–प्रेमसागर । रचनाकाल सं० 1955 वि० ।

छन्द

मैं गुन मानौं तेरो ललिता, मोहन नैंक मिला दे ।
अब न "मान" कर बैठों कबहूँ, दरस सुधारस मोहिं करादे ।
अब की चूक माफ कर मोहन, जिय की तपन बुझा दे ।
"राजकुमारि" कहै प्यारी जू, पीरे पट सौं नयन पुछा दे ॥

सौजन्य द्वारा — श्री हरिमोहन लाल श्रीवास्तव,
16, वर्मा जी वाली गली, दतिया (म०प्र०)

योगी श्री अनामय जी

अनामय कुटीर, सिविल लाइन्स, दतिया

'सम्बल हो यदि शुभ कर्मों का'

ज्योतिर्मय परिधान पसारे, हिमकर नभ में फेरी देता,
कहीं चकोर बैठा एकाकी, आत्म–विभोर सहज सुख लेता ।
नहीं अपेक्षा धनपद की है सहज सुखी है जो तन धारी,
सम्बल हो यदि शुभकर्मों का मिट जाये दुविधा यह सारी ।

श्री गजराजसिंह खरे 'निर्भीक'

जन्म — श्रावण कृष्ण 4, संवत् 1992 वि० । ग्राम खरैला, तहसील मोंठ, जिला झाँसी । पितृ नाम — स्व० श्री प्रतापसिंह भड़ँरिया ।

व्यवसाय — अध्यापक, राजकीय माध्यमिक शाला, ग्राम पो० कुसौली, दतिया ।

विशेष — बुन्देली के सुप्रसिद्ध हास्य-कवि एवं प्रवक्ता । मानस के प्रवचनकार के रूप में ग्रामों में लोकप्रिय ।

प्रकाशित कृतियाँ — बुन्देली बोल, लोक लहरी, लोकगीत-चालीसा, श्री चित्र-गुप्त-चालीसा, जय हनुमंत लाल, हँसे तो फँसे आदि ।

महावीर-महिमा

हनूमान् हैं हमाए, हम हनुमत के पूत ।
हनूमान् की हूँक सें, भड़ भड़ात हैं भूत ।। 1

वीरन विच बलबंत हैं, संतन बीच महंत ।
पवन पुत्र हनुमंत कौ, को कवि पावै अंत ।। 2

एक हाथ में मुष्टिका, दूजे धरें पहाड़ ।
लाल ध्वजा खों देखतन, चुरमुरात हैं हाड़ ।। 3

हमसें का पूँछत लला, हनूमान की आप ।
'हनू' शब्द के सुनत खन, मरत पाप कौ वाप ।। 4

सूदे ना समझौ इनें, हैं लरवे खों साँड़ ।
कठिन मुष्टिका मार सें, भुस कर देतइं हाड़ ।। 5

जग में नईं जन्मों लला, हनूमान सौ लाल ।
रोंम-रोंम में रम रए, रामचन्द्र भूपाल ।। 6

हनूमान खों आज तक, लगौ न कौंनउँ ऐल ।
राम सिया के पास हैं, को कर सकतइ फैल ।। 7

हनूमान हैं राम के, ओली लए सपूत ।
इतनी सेवा करत हैं, परत राम खों कूत ।। 8

वड़ी कठिनता सें घुसत, हिय में हनुमत हूँक ।
जीवन भर 'निर्भीक जी' हड़ गए चूलौ फूँक ।। 9

डरे फिरत हैं देश में, मुलक उचक्का चोर ।
हनूमान हन दो इनें, मारौ मुड़ी मरोर ।। 10

कहते कवि 'निर्भीक' जी, गारंटी के साथ ।
कलजुग का सब चार्ज है, हनूमान के हाथ ।। 11

('श्री हनुमंत दोहावली से')

श्री हरिश्चन्द्र गौड़

जन्म — 8-10-1966 ई०, शिक्षा — बी-एस०सी०, पत्रकारिता डिप्लोमा।
व्यवसाय — प्रेरक, साक्षारता मिशन।
विशेष — अध्यक्ष, विश्वकर्मा ई० संघ, पत्रपत्रिकाओं में रचनायें प्रकाशित।
सम्पर्क — पुराना बाजार, थरेट, जिला दतिया (म०प्र०) पिन-475673।

"जिन्दगी"

आकांक्षाओं की भीड़ में,
एक निरर्थक प्रयास !
भयंकर दुर्भिक्ष में
खाना ढूँढती चिड़िया।
सुबह से शाम तक
भोजन / ढूँढती / तलाशती
भटकती — अन्त में
निराश हो, लौट आती है
उस/पर्ण विहीन वृक्ष की टहनी में
बिंधे तिनकों के घरौंदे में/और
घौंसले के द्वार पर बैठ
लाचार शब्दों में,
भूख से चिचियाते बच्चों को
देती है सांत्वना,
कल भोजन मिल जाने की
झूठी तसल्ली।
और / स्वयं आहत होती है
त्रासदी के नुकीले खौफ से
उसकी पथराई/नींद-विहीन
आँखों के सामने/पसर जाती है
गहरी काली रात,
ठीक वर्तमान की तरह।
वह टूट जाती है। कई टुकड़ों में
और कशमकश में गुजर जाती है
रात/होती है सुबह
वह फिर एक नई आशा लेकर
उड़ जाती है,
भोजन की तलाश में।
वह सोचती है, उसे आशा है
दृढ़ विश्वास है — कि
आज अवश्य मिलेगा भोजन
परन्तु, शाम फिर हो गई
वही, निराशा और टूटन भरी;
अब उसका विश्वास टूट रहा
है-
इस संसार से, मोह छूट रहा है
वह जाना चाहती है, अब
वहाँ / क्षितिज के उस पार
जहाँ से सूरज निकलता है और
होती है "नई सुबह"
जहाँ रेत भरी सूखी नदी
जाकर लुप्त होती है,
जो जिन्दगी की राह की भी,
है अन्तिम मंजिल ? परन्तु नहीं
यह भी नही कर सकी वह
उसे फिर याद आ गया,
अपना छोटा सा संसार,
छोटा सा घरौंदा,
चिचयाते बच्चे।
वह फिर उड़ती है,
थकी उड़ान, घौंसले की ओर।

श्री प्रकाशचन्द्र शर्मा (विलगैयाँ)

जन्म — 1 जुलाई सन् 1942 ई० ।

शिक्षा — बी० ए०, बी० टी० ।

पद — शिक्षक ।

विशेष — काव्यसर्जना में सहज अभिरूचि ।

सम्पर्क — विलगैयाँ सदन, चूनगर फाटक, दतिया ।

बसंत या स्वतंत्रता

वसुधा प्रमुदित क्यों कहो आज,
अनुराग पूर्ण सब दिशा बनी ।
मद मस्त पवन क्यों इठला कर,
सुना रहा नव राग रागिनी ॥

बन में यदि फूलों को देखो,
तो फूले नहीं समाते हैं ।
कारण यदि उनसे पूछो तो,
कहने में ही बलखाते हैं ॥

अपने प्रियतम से मिलने को,
पुष्पाच्छादित हैं लतिकायें ।
सौरभ दिगंत में फैल रहा,
हंसती फिरती अलिमालायें ॥

अब देख प्रकृति का नया साज,
नर विसमित सा हो जाता है ।
कुछ सोच समझ मन में अपने,
कहता बसंत क्या आता है ॥

मैंने वसंत का वर्षों से,
देखा इतना सम्मान नहीं ।
बोली पिक उत्तर में त्यो ही,
पर भारत आज गुलाम नहीं ॥

नव प्रभा लिये है आज सूर्य,
स्वतंत्र ज्ञान गूंजा वन मे ।
भारत की भावी आशायें,
आश्रित हैं अपने जन गण में ॥

श्री राज गोस्वामी

पिता का नाम — श्री माधव किशोर गोस्वामी ।
जन्म तिथि — 1 जनवरी 1957 । जन्म स्थान — दतिया (म०प्र०) ।
काव्य कृतियाँ (प्रकाशित) – 1. ओ मेरे मन 1981 । 2. अनुबंधों के छंद 1983 3. मम्मी की मिट्ठी 1987 । 4. जटायू (खण्डकाव्य) । 5. मेरी कविता यात्रा ।
सम्प्रति — म०प्र० शासन, जल संसाधन विभाग, दतिया में लिपिकीय पद पर कार्यरत ।
मानद उपाधि — विक्रम शिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर द्वारा–विद्यावाचस्पति पी–एच०डी० की मानद उपाधि मार्च 1991 में प्रदाय ।
2. रिफरेन्स इण्डिया पुस्तक में 272 पृष्ठ पर उल्लेख ।
3. म०प्र० हिन्दी साहित्य संकलन शाखा दतिया के संयोजक एवं म०प्र० बाल साहित्यकार परिषद दतिया शाखा का अध्यक्ष ।
सम्पर्क — सिविल लाइन्स, दतिया (म०प्र) ।

'प्रकृति नटी के खेल निराले'

होता झंझावात कहीं पर घोर मरुस्थल ।
कहीं मोहता मन अरुणोदय कहिं अस्ताचल ॥
कहीं कहीं पूरे सूरज को ग्रहण दबा ले ।
प्रकृति नटी के खेल निराले ॥
मंद सुगंध समीर कहीं पर कही उमस है क्वांर की ।
कहीं उमसती देह धूप से, कहीं हवाऐं प्यार की ॥
कहीं वियोगिन की छाती के दर्द सम्भाले ।
प्रकृति नटी के खेल निराले ॥
कहीं उफन नदियां करती हैं अनगिन नर संहार ।
कहीं सलिल सरिता बह करती पतितों का उद्धार ॥
कहीं झूमते अम्बर पर घन काले काले ।
प्रकृति नटी के खेल निराले ॥
कहीं रंक को राजा कर दे कहीं भिखारी भूप को ।
कहीं झुलसती देह धूप से कहीं तरसते धूप को ॥
कहीं कहीं पर सामन्तों के कड़े दिवाले ।
प्रकृति नटी के खेल निराले ॥

श्री महेश प्रसाद गुप्ता "उमेश"

पिता का नाम — श्री दामोदर प्रसाद गुप्ता।

जन्म स्थान — ग्राम बेरू, तहसील, डबरा जिला–ग्वालियर।

जन्म दिनांक — 1–1–1957 (एक जनवरी सत्तावन ई०)।

व्यवसाय — शासकीय सेवा, शिक्षा — वाणिज्य स्नातक।

रचनायें — 1. प्रकाशित :– 22। 2. अप्रकाशित :– 30।

रुचि — साहित्य सृजन।

सम्पर्क सूत्र — एच – 14 सिविल लाइन्स, दतिया।

"दीप जला लो"

आई दिवाली दीप जला लो।
अवगुण जो हों उन्हें जला लो॥
सोया हुआ जो सत्य आज है।
मिथ्या बचन में नहीं लाज है॥
कुविचारों को दूर–भगा लो।
आई दिवाली ......

सदाचार जो सुस्त पड़ा है।
अनाचार हर द्वार खड़ा है॥
सुविचारों को पुनः जगा लो।
आई दिवाली ....

जीतो जग को दया प्रेम से।
छल कपटी जो हुये जन्म से,
उन दुष्टों से आज विदा लो।
आई दिवाली..........

मातृ प्रेम से भटक गये हैं।
गिरकर नभ से अटक गये हैं॥
प्रेम से होती जीत जता लो।
आई दिवाली..........

तिमिर बसा जो दिल में हमारे।
बढ़ता है जो अवगुण के सहारे॥
ज्ञान दीप से उमेश भगा लो।
आई दिवाली ....

श्री संतूराम उदासीन

पिता का नाम — स्व० श्री भगवान दास उदासीन ।

जन्म दिनांक — 2-3-55 ई० ।

जन्म स्थान — वाँटवा (गुजरात) ।

शिक्षा — बी० ए० ।

व्यवसाय — आचार्य स० शि० म० दतिया ।

विशेष — देश भक्ति पूर्ण काव्य सृजन में रुचि ।

सम्पर्क — छोटा बाजार, दतिया ।

ऐ जवान

ऐ जवान ! कर खुद पर अभिमान ।
तेरे दम से आगे चलता सारा हिन्दुस्तान ।

देश हमारा प्यारा है, नारा तू लगाता है ।
भारत माँ के चरणों में सर तू झुकाता है ।
तेरे जैसा हो नहीं सकता कोई भी इंसान ।
ऐ जवान ! कर खुद पर अभिमान ।

तूने अपनी ताकत से दुश्मन को मार भगाया है ।
सीने चढ़के दुश्मन के तू कितना मुसकाया है ।
भारत माँ के चरणों में तू दे देता जान ।
ऐ जवान ! कर खुद पर अभिमान ।

तू भारत को प्यारा है, भारत तुझको प्यारा है ।
भारत मेरा अपना है, यह बस तेरा नारा है ।
क्या कर सकता तेरे आगे चीन व पाकिस्तान ।
ऐ जवान ! कर खुद पर अभिमान ।

श्री महेश लाक्षाकार "अनुरागी"

जन्म तिथि — 1 जनवरी 1950 ई० ।

योग्यता — स्नातक । व्यवसाय — स्वरोजगार ।

विशेष — कवि एवं गीतकार, रंगतरंग, बीसवींशताब्दी, इत्यादि काव्य संग्रहों में प्रकाशित कवितायें । विविध पत्रपत्रिकाओं में प्रकाशित ।

सम्पर्क — गांधी रोड तिगैलिया, दतिया (म०प्र०) ।

गीत

"अन्तर्मन में दीप जलाकर"

अन्तरतम में दीप जलाकर, कर मन पर विश्वास ।
मन का पंछी उड़कर जा तूँ, अपने प्रिय के पास ।
शून्य क्षितिज अम्बर मे जाकर, प्रतिमा एक बना देना ।
प्राणों का साज सजाकर के, जीवन अमृत वर्षा देना ।।
मद भरी मधुर स्मृति देकर तोड़ न देना आस ।
मन का पंछी उड़कर जा तूँ, अपने प्रिय के पास ।
मधुगन्ध भरी कुशमित रातों में, मन सिन्दूरी कर देना ।
कलपित दुनियाँ में रंग भरकर, प्राँण उसी में भर देना ।।
अखियाँ बौरी पन्थ निहारे, प्रियतम गये प्रवास ।
मन का पंछी .... ।
जीवन के बिछुड़े इस क्षण में, पतझड़ आया सपने लेकर ।
दे भार प्रणभ का कोई, ठुकराता है आशा देकर ।।
प्रति सांस चटकती पल पल, दूर गया उल्लास ।
मन का पंछी .... ।
वेगानेपर की इस दुनियाँ में, प्राणों से प्राणों का घट है ।
डमाडोल किस्ती की मग में दूर पड़ा सरिता का तट है ।।
डगमग नैया माझी देखे, मन होता क्यो हतास ।
मन का पंछी — —— .... ।
निजमग से कंटक वटोर मुश्काती पीढ़ा भर डर में ।
रोता सिसकता छोड़ जग को, मुश्काती पीढ़ा भर डर में ।
खोई आशा वापिस लेले, जीवन भया उदास ।
मन का पंछी .... ।

श्री श्याम विहारी शर्मा 'श्याम'

पितृ नाम — पं० श्री रामनारायण शर्मा (द्विवेदी)।
जन्म — 1 जनवरी सन् 1958 ई०।
शिक्षा — उच्चतर माध्यमिक।
व्यवसाय — कृषि।
रुचि — साहित्य सृजन एवं पत्रकारिता।
विशेष — सम्पादक, ब्राहम्णपराग, हिन्दी मासिक, अनेक पत्र पत्रिकाओं के प्रतिनिधि।
सम्पर्क — ग्राम व पोस्ट–कुसौली, जिला (दतिया)।

'नीरस हैं भइया आज कालन के बोल'

उजड़ गई वगिया करें कउआ किलोल।
नीरस हैं भइया आज कालन के वोल॥

स्वारथ की पटरी पै चल रही है ट्रेन,
पापन से भरे घरे बिकवे खों कैंन।

पीवे खों मिल रओ है अँसुअन को घोल।
नीरस हैं भइया आज कालन के वोल॥

साँच की कुठरिया में लग रई है आँच,
झूँठन के वँगलन पे हो रओ है नाँच।

विकरई है इज्जत अब कौड़ी के मोल।
नीरस है भइया आज कालन के बोल॥

चमचन की दुनियाँ में आ गई है बाढ़,
हड़ियन में चमचन सें करलओ है लाड़।

चमचन खों मिल गई हैं ढोलन की पोल।
नीरस हैं भइया आज कालन के वोल॥

दौड़त दो जा रई हैं जीवन की गाड़ी,
मरियल हैं बैला, एक बँधियँन की ठाँड़ी।

बैठ हो कितै श्याम निज दिल टटोल।
नीरस हैं भइया आज कालन के वोल॥

श्री रविन्द्र श्रीवास्तव

पिता का नाम — श्री भगवत स्वरूप श्रीवास्तव ।
जन्म स्थान — करैरा ।
जन्म दिनांक — 12 मार्च 1972 ई० ।
शिक्षा — बी–एस० सी० ।
आत्मकथ्य — काव्य रुचि ।
सम्पर्क — राजगढ़ गेट, दतिया ।

'मजदूर'

एक मजदूर
जिसने बनाया विश्व
गगन चुम्बी इमारतों
का विश्व ।
लेकिन अपने हिस्से में
रखा वही झोपड़ा,
काली अंधेरी रातों
वाला झोपड़ा ।

बदले में रखी
वही दो जून की
रोटी और दाल
धन्य है तुझ जैसा इंसान
जिसने सब कुछ किया
अपने देश के लिये
राष्ट्र के लिये
पर अपने लिये रखा
वही अंधेरी रातों
वाला झोपड़ा
केवल वही झोपड़ा ॥

श्रीमती ममता श्रीवास्तव

जन्म तिथि — 15 नवम्बर 1941 ई०।
शिक्षा — एम० ए०, बी० एड०, एल० एल० बी०, पत्रकारिता डिप्लोमा।
व्यवसाय — व्याख्याता।
रचनायें — प्रकाश्य–काव्य सरिता।
रुचि — समाज सेवा।
सम्पर्क सूत्र — मकान नं० 1, हरदुआवाली गली, दतिया (म०प्र०)।

उद्‌बोधन–गीत

आज कुछ गीत नये गाओ साथियो,
चेतना देश की जगाओ साथियो।
बहुत गा चुके हो, गीत श्रृंगार के,
कभी जीत के, तो कभी हार के।
आज कुछ नया गुन गुनाओ साथियो।
चेतना देश की जगाओ साथियो।
नेता अभिनेता करोड़पति बने,
बापू के रास्ते को भूल ये चले।
इनको भी सादगी सिखाओ साथियो,
चेतना देश की जगाओ साथियो।
रो रहे हैं नवयुवक बेरोजगारी से।
काम नहीं मिलता कुछ ईमानदारी से।
इनको भी साहस सिखाओ साथियो,
आज कुछ गीत नये गाओ साथियो।
माता पिता जल रहे चिन्ता की अग्नि में,
नवबधुयें जल रहीं, दहेज़ अग्नि में।
दहेज दानव से इनको बचाओ साथियो,
आज कुछ गीत नये गाओ साथियो।
भाई भाई आपस में आज लड़ रहे,
देश प्रेम छोड़ स्वार्थ में रम रहे।
इनको भी एकता सिखाओ साथियो।
चेतना देश की जगाओ साथियो।

कु० अर्चना खरे

पिता — श्री डी० पी० श्रीवास्तव ।

शिक्षा — एम–ए० ।

विशेष — सचिव, यूथ हास्टल एसोसियेशन आफ इण्डिया, यूनिट दतिया एवं राष्ट्रीय सेवा कर्मी युवा–संघ ।

सम्पर्क — गहोई धर्मशाला के पास, बड़ा बाजार, दतिया (म०प्र) ।

शमा–परवाना

दीप देखा एक गृह मे जल रहा,
स्वयं जलकर मनुज सेवा कर रहा ।
ज्योति का वह सुभग सुन्दर प्रदाता,
तिमिर का नाशक प्रभा का विधाता ।

ज्योति जिसकी मंद, किन्तु अमंद थी,
तेल की जिसमें अनोखी गंध थी ।
वीतते जाते पहर पर थे पहर,
और अन्तिम का चुका–था यह कहर ।

चन्द आये थे पतंगे झूमकर,
दीप की लौ भंगिमा को चूमकर ।
कर दिये अपने निछावर प्राण तन,
किन्तु दीपक को जलाया चिरन्तन ।

अगर उन्नत कर सको निज प्राण दे,
सजगता से जीव को कल्याण दे ।
नहीं सर्वस्व प्राणी के लिए,
नेक वह जो सदा परहित में जिये ।

Bharatiya Vidya Bhawan's Sri Shankaracharya Sanskrit Vidyapeetha
630

Bhawan's Sri Sankaracharya Sansk... Mahavidyalaya ... aratiya Vidya